▪ RNI No. 58061/93 ▪ वर्ष - 21 ▪ अंक - 86 ▪ पृष्ठ - 8 ▪ रु. 5/- बेंगलूरु » रविवार » 19-10-2025 ▪ www.dakshinbharat.com ▪ Email : news@dakshinbharat.com

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತ ರಾಷ್ಟ್ರಮತ | ಹಿಂದಿ ದಿನ ಪತ್ರಿಕೆ | बेंगलूरु और चेन्नई से एक साथ प्रकाशित

5 'नया मुखौटा पहने जंगल राज' पर भरोसा न करें : शाह

6 सिपाही प्रदीप सिंहः आखिरी सांस तक अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहे

7 'थामा' का 'यक्षासन' मेरे बच्चों को जरूर पसंद आएगा : नवाजुद्दीन

फर्स्ट टेक

हूती विद्रोहियों ने यमन में संयुक्त राष्ट्र कार्यालय पर हमला किया

काहिरा/एपी। ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों ने शनिवार को यमन की राजधानी सना में संयुक्त राष्ट्र के एक कार्यालय पर हमला किया, हालांकि सभी कर्मचारी सुरक्षित हैं। संयुक्त राष्ट्र के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। यमन में संयुक्त राष्ट्र के स्थानीय समन्वयक के प्रवक्ता जीन आलम ने बताया कि हूती विद्रोही सना स्थित संयुक्त राष्ट्र परिसर में घुस गये। उन्होंने बताया कि हूती विद्रोहियों के हमले के समय परिसर में संयुक्त राष्ट्र के 15 अंतरराष्ट्रीय कर्मचारी मौजूद थे, और ''ताजा जानकारी के अनुसार परिसर में मौजूद सभी कर्मचारी सुरक्षित हैं।'' संयुक्त राष्ट्र के एक अन्य अधिकारी ने नाम उजागर नहीं करने की शर्त पर बताया कि इमारत का संचालन संयुक्त राष्ट्र द्वारा किया जाता है और वहां तैनात कर्मचारी विश्व खाद्य कार्यक्रम और यूनिसेफ सहित संयुक्त राष्ट्र की विभिन्न एजेंसियों से जुड़े हैं।

भारत 7 नैनोमीटर कंप्यूटर चिप 2028 तक तैयार कर लेगा

नई दिल्ली/भाषा। भारत का स्वदेशी रूप से डिजाइन किया गया 7 नैनोमीटर (एनएम) कंप्यूटर प्रोसेसर 'शक्ति' 2028 तक तैयार होने की उम्मीद है, जिसे भविष्य में स्थानीय स्तर पर चिप संयंत्र में उत्पादित किया जा सकता है। आईआईटी मद्रास स्थित टीम ने शनिवार को केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव को यह जानकारी दी। मंत्री के सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट किए गए एक वीडियो से पता चलता है कि उन्होंने टीम को चिपसेट के स्वदेशी उत्पादन की तैयारी के लिए हरी झंडी दे दी है, जिसका उपयोग आईटी सर्वर में किया जा सकता है।

वैष्णव ने वीडियो में कहा, ''हम 28 नैनोमीटर से 7 एनएम तक का सफर तय कर रहे हैं ताकि भविष्य में इसे हमारे 'फैब' में लोड किया जा सके। चलिए इसे करते हैं।'' आईआईटी मद्रास की एक टीम द्वारा विकसित किया जा रहा यह प्रोसेसर वित्तीय, संचार, रक्षा और रणनीतिक क्षेत्रों के लिए कंप्यूटर सर्वरों में तैनाती पर ध्यान देगा।

19-10-2025	20-10-2025
सूर्यास्त 5:58 बजे	सूर्योदय 6:10 बजे

BSE	NSE
83,952.19	25,709.85
(+484.53)	(+124.55)

सोना	चांदी
12,783 रु.	167,199 रु.
(24 कैरेट) प्रति ग्राम	प्रति किलो

अब पाकिस्तान की एक-एक इंच जमीन 'ब्रह्मोस' की पहुंच में है : राजनाथ सिंह

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

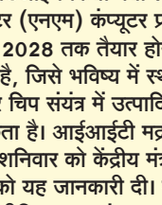

लखनऊ/भाषा। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को कहा कि अब पाकिस्तान की एक-एक इंच जमीन 'ब्रह्मोस' मिसाइल की पहुंच में है। सिंह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ लखनऊ स्थित 'ब्रह्मोस एयरोस्पेस' इकाई में निर्मित 'ब्रह्मोस' मिसाइल की पहली खेप के अनावरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर रक्षा मंत्री ने कहा, ऑपरेशन सिंदूर ने यह सिद्ध कर दिया है कि अब जीत हमारे लिए कोई छोटा-मोटा इंसीडेंट (घटना) नहीं रहा, बल्कि यह हमारी आदत बन चुकी है। अब हमें इस आदत को बनाए रखने के साथ-साथ इसे और भी मजबूत करने का संकल्प लेना होगा।

राजनाथ सिंह ने कहा कि देश के किसी भी हिस्से में जब 'ब्रह्मोस' का नाम लिया जाता है तो लोगों को इसकी तकनीकी विशेषताएं भले न पता हों, लेकिन बच्चों से लेकर बुजुर्गों और महिलाओं तक के मन में मिसाइल की छवि के साथ-साथ विश्वसनीयता स्वाभाविक रूप से आ जाती है। उन्होंने कहा, अब सबको भरोसा है कि हमारे विरोधी 'ब्रह्मोस' से नहीं बच पाएंगे। जहां तक पाकिस्तान की बात है, उसकी एक-एक इंच जमीन अब ब्रह्मोस की पहुंच मे है।

रक्षा मंत्री ने कहा, ऑपरेशन सिंदूर में जो कुछ हुआ, वह सिर्फ एक 'ट्रेलर' (नमूना) था। लेकिन उसने ही पाकिस्तान को यह एहसास दिला दिया कि अगर भारत पाकिस्तान को जन्म दे सकता है, तो समय आने पर वह...। सिंह ने अपने भाषण में उपरोक्त पंक्ति पूरी नहीं, बल्कि वहां मौजूद लोगों से कहा, अब मुझे आगे बोलने की कोई जरूरत नहीं है-आप खुद समझदार हैं।

राजनाथ सिंह ने कहा कि देश और दुनिया की उम्मीदें भारत के लिए एक बड़ा अवसर हैं। उन्होंने कहा कि जब देशवासियों को यह विश्वास होता है कि हमारे पास 'ब्रह्मोस' जैसा हथियार है, तो यह उन्हें सुरक्षा का भरोसा देता है। उन्होंने कहा, इसमें (मिसाइल) एक ओर परंपरागत चीज है तो दूसरी ओर आधुनिक सिस्टम है। यह लंबी दूरी तक मार करने में सक्षम है।

क्यूआरटी वाहन

होंडा इंडिया फाउंडेशन ने शनिवार को बेंगलूरु के विधान सौधा में कर्नाटक राज्य पुलिस को त्वरित प्रतिक्रिया दल (क्यूआरटी) वाहन सौंपे।

पंजाब में अमृतसर-सहरसा गरीब रथ एक्सप्रेस के एक डिब्बे में लगी आग

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

फतेहगढ़ साहिब (पंजाब)/भाषा। पंजाब के फतेहगढ़ साहिब में सरहिंद रेलवे स्टेशन के पास शनिवार सुबह अमृतसर-सहरसा गरीब रथ एक्सप्रेस के एक डिब्बे में आग लग गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। रेलवे बोर्ड के अनुसार, इस घटना में एक महिला को मामूली चोटें आई हैं। घटना के कारण का अभी पता नहीं चल पाया है।

आग सुबह करीब साढ़े सात बजे उस समय लगी जब ट्रेन (संख्या 12204) अमृतसर से आ रही थी। राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) के एक अधिकारी ने बताया कि ट्रेन के एक एसी कोच में धुआं देखा गया।

अधिकारी ने बताया कि एक यात्री ने ट्रेन रोकने के लिए चेन (अलार्म चेन खींचने की प्रणाली) खींची जिसके बाद यात्रियों को डिब्बे से सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। उन्होंने बताया कि आग ने डिब्बे (जी-19) को जल्द ही अपनी चपेट में ले लिया। दो अन्य डिब्बों को भी मामूली नुकसान हुआ। जीआरपी अधिकारी ने बताया कि तीनों डिब्बों को ट्रेन के बाकी हिस्सों से अलग कर दिया गया और दमकल गाड़ियों को तुरंत बुलाया गया।

रेलवे बोर्ड ने बताया कि घटना में एक महिला को मामूली चोटें लगी हैं। जीआरपी सरहिंद के थाना प्रभारी रतन लाल ने बताया कि 32 वर्षीय महिला को कुछ चोटें आई हैं और उसे फतेहगढ़ साहिब के सिविल अस्पताल ले जाया गया है।

अधिकारियों ने बताया कि आग लगने की सूचना मिलते ही रेलवे प्राधिकारियों ने प्रभावित डिब्बे के यात्रियों को अन्य डिब्बों में स्थानांतरित कर दिया है। उन्होंने बताया कि ट्रेन शीघ्र ही अपने गंतव्य के लिए रवाना होगी।

ढाका अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर लगी भीषण आग, उड़ानें स्थगित

ढाका/भाषा। बांग्लादेश की राजधानी ढाका स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के 'कार्गो कॉम्प्लेक्स' में शनिवार को भीषण आग लग गई, जिसके चलते अधिकारियों को सभी उड़ानों का संचालन स्थगित करना पड़ा। आग के बाद हवाई अड्डे के आसपास घना काला धुआं छा गया। घटना में किसी के हताहत होने की तत्काल कोई खबर नहीं है। बांग्लादेश नागरिक उड्डयन प्राधिकरण (सीएएबी) ने कहा कि हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर दोपहर में आग लग गई, जिसके बाद दो दर्जन से ज्यादा दमकल गाड़ियों को तैनात किया गया और अतिरिक्त टीमें घटनास्थल पर भेजी गईं। अग्निशमन सेवा के प्रवक्ता तल्हा बिन जासिम ने कहा, हमें अपराह्न 2:30 बजे सूचना मिली और हमने हवाई अड्डे पर तैनात दमकल वाहनों की मदद के लिए और दमकल गाड़ियां भेजीं। उन्होंने बताया कि 36 दमकल गाड़ियां आग बुझाने में लगी हुई हैं। सीएएबी के अधिकारियों ने बताया कि वायु सेना की दमकल गाड़ियां भी बचाव अभियान में शामिल हो गई हैं।

किसानों की सेवा ही भगवान की सेवा : कृषि मंत्री चौहान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

देवरिया/भाषा। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उत्तर प्रदेश के देवरिया में शनिवार को कहा कि किसानों की सेवा ही भगवान की सेवा है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हर किसान की आय दोगुनी करना हमारा लक्ष्य है। गौरवशाली, आत्मनिर्भर समृद्ध भारत का निर्माण हमारा लक्ष्य है। भारतीय किसानों के हितों से कोई भी समझौता नहीं करेंगे। केंद्रीय कृषि मंत्री ने देवरिया जिले के पथरदेवा स्थित आचार्य नरेंद्र देव इंटर कॉलेज में जनसभा को संबोधित करते हुए किसानों से अच्छी फसल के लिए अच्छे बीजों का इस्तेमाल करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि जो लोग खराब बीज बेचते हैं, वे सावधान रहें, उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

चौहान ने यह भी कहा कि प्राकृतिक खेती अपनाकर आने वाली पीढ़ियों के लिए भूमि और मिट्टी को संरक्षित किया जाना चाहिए। इसके लिए उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से बचना होगा।

इससे पहले, केंद्रीय मंत्री ने भारतीय जनसंघ के नेता स्वर्गीय रवींद्र किशोर शाही की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने मेले में विभिन्न विभागों के स्टालों का निरीक्षण किया और प्रतिभागी किसानों व विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाण पत्र भी दिए।

इस दौरान केंद्रीय मंत्री कमलेश पासवान, उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, उत्तर प्रदेश की राज्य मंत्री विजय लक्ष्मी गौतम, देवरिया के सांसद शशांक मणि त्रिपाठी, कुशीनगर के सांसद विजय कुमार दुबे, देवरिया के विधायक शलभ मणि त्रिपाठी उपस्थित थे।

कर्नाटक में 21.64 करोड़ रुपए की जीएसटी चोरी का खुलासा

बेलगावी (कर्नाटक)/भाषा। जीएसटी खुफिया महानिदेशालय (डीजीजीआई) की बेलगावी क्षेत्रीय इकाई ने शनिवार को कहा कि उसने दावणगेरे के हरिहर में एक कबाड़ कारोबार में 21.64 करोड़ रुपए की जीएसटी चोरी का खुलासा किया है। डीजीजीआई के अनुसार, कंपनी ने लगभग 112 करोड़ रुपए मूल्य के फर्जी बिल जारी किए, जिसके परिणामस्वरूप 17.14 करोड़ रुपए के इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) का धोखाधड़ीपूर्ण लाभ और उपयोग हुआ। डीजीजीआई की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है, निरीक्षण के दौरान, कंपनी के संचालन के लिए जिम्मेदार प्रमुख व्यक्ति के रूप में पहचाने गए मोहम्मद सकलैन का विभाग द्वारा एकत्र किए गए साक्ष्यों से आमना-सामना कराया गया। उन्होंने फर्जी बिल के बल पर धोखाधड़ी से आईटीसी का लाभ उठाने की बात स्वीकार की।'' उन्होंने रिवर्स चार्ज मेकैनिज्म (आरसीएम) के तहत 4.50 करोड़ रुपए के (माल एवं सेवा कर) जीएसटी का कम भुगतान भी स्वीकार किया, जिससे कुल जीएसटी चोरी 21.64 करोड़ रुपए हो गई।

जीएसटी दरों में कटौती का लाभ उपभोक्ताओं तक पहुंच रहा : सीतारमण

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

■ सरकार 22 सितंबर को जीएसटी की कम दरें लागू होने के बाद से देश भर में 54 वस्तुओं की कीमतों पर नजर रख रही है।

नई दिल्ली/भाषा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को कहा कि जीएसटी सुधारों का लाभ कम कीमतों के रूप में उपभोक्ताओं को मिल रहा है। जीएसटी बचत उत्सव पर एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार 22 सितंबर को जीएसटी की कम दरें लागू होने के बाद से देश भर में 54 वस्तुओं की कीमतों पर नजर रख रही है।

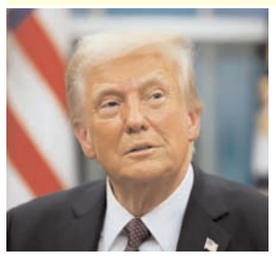

सीतारमण ने कहा, ''जीएसटी दरों में कमी के चलते खरीदारी बढ़ी है। उपभोग में वृद्धि का सिलसिला जारी रहेगा।'' उन्होंने आगे कहा, ''हमें भरोसा है कि ऐसी हर वस्तु पर कंपनियां उपभोक्ताओं को लाभ पहुंचा रही हैं।'' उन्होंने बताया कि कुछ वस्तुओं के मामले में व्यवसायों ने जीएसटी दर कटौती से अधिक लाभ उपभोक्ताओं को दिया है।

सीतारमण ने कहा कि उपभोक्ता मामलों के विभाग को जीएसटी कटौती के अनुरूप कीमतों में कमी न करने से संबंधित 3,169 शिकायतें मिली हैं। इनमें से 3,075 शिकायतें केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) के नोडल अधिकारियों को भेज दी गई हैं। विभाग ने 94 शिकायतों का समाधान किया है। वित्त मंत्री ने कहा कि विभाग शिकायत पोर्टल पर एक सुविधा उपलब्ध कराएगा, ताकि शिकायतों को उन संबंधित क्षेत्रों के मुख्य आयुक्तों को भेजा जा सके जहां से शिकायतें मिली हैं।

इसी संवाददाता सम्मेलन में केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को कहा कि जीएसटी सुधारों के कारण इस साल 20 लाख करोड़ रुपए की अतिरिक्त इलेक्ट्रॉनिक्स बिक्री होने की उम्मीद है। मंत्री ने कहा कि सभी खुदरा श्रृंखलाओं के आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले नवरात्रि की तुलना में 20-25 प्रतिशत अधिक बिक्री हुई और 85 इंच के टीवी जैसी कई ऐसी श्रेणियां हैं।

पाकिस्तान-अफगानिस्तान संघर्ष को सुलझाना मेरे लिए 'आसान' है : ट्रंप

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

■ ट्रंप ने 'आठ युद्ध' रूकवाने के बावजूद नोबेल शांति पुरस्कार न मिलने पर एक बार फिर निराशा व्यक्त की है।

वाशिंगटन/भाषा। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच बढ़ती शत्रुता के बीच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया कि ''अगर'' उन्हें दोनों देशों के बीच संघर्ष को हल कराने की जरूरत पड़ी तो यह उनके लिए ''आसान'' बात होगी।

ट्रंप ने यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के साथ भोज के दौरान मीडिया से कहा, मैं समझता हूं कि पाकिस्तान ने हमला किया या अफगानिस्तान के साथ संघर्ष जारी है, अगर मुझे इसे सुलझाना है तो यह मेरे लिए आसान है।

ट्रंप ने लाखों लोगों की जान बचाने का एक बार फिर दावा किया और साथ ही यह आश्वासन भी दिया कि उन्हें अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच संघर्ष को सुलझाने में ''सफलता'' मिलेगी। उन्होंने कहा, मुझे लोगों को मारे जाने से रोकना अच्छा लगता है। मैंने लाखों-करोड़ों लोगों की जान बचाई है और मुझे लगता है कि हमें इस युद्ध को रोकने में सफलता मिलेगी।

पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाकर नए हवाई हमले किए जिससे दोहा में होने वाली अपेक्षित वार्ता पर ग्रहण लग गया। इससे पहले दोनों पक्षों के बीच संघर्षविराम ने हमलों पर अस्थायी रूप से विराम लगा दिया था।

समाचार पत्र 'डॉन' की शनिवार की रिपोर्ट के अनुसार, इन हमलों से पहले आतंकवादियों ने उत्तरी वजीरिस्तान में एक सैन्य प्रतिष्ठान पर बंदूक और बम से हमले किए थे।

इस बीच, ट्रंप ने ''आठ युद्ध'' रूकवाने के बावजूद नोबेल शांति पुरस्कार न मिलने पर एक बार फिर निराशा व्यक्त की है।

ट्रंप ने कहा, आप जानते हैं कि हमने आठ अन्य समस्याओं का समाधान किया है।... मैंने आठ युद्ध सुलझाए। उन्होंने कहा, हर बार जब मैं एक का समाधान कराता हूं तो वे कहते हैं कि अगर आप अगले का भी समाधान कर लेते हैं तो आपको नोबेल पुरस्कार मिलेगा।

ट्रंप ने हालांकि तुरंत यह भी कहा कि उन्होंने यह नोबेल के लिए नहीं किया। उन्होंने दावा किया कि वह 2025 की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता (मारिया कोरिना मचाडो) को नहीं जानते। उन्होंने मचाडो का नाम नहीं लिया। उन्होंने कहा, मुझे नोबेल पुरस्कार नहीं मिला। किसी को यह पुरस्कार मिला है।

मिशन मंडेला
दक्षिण भारत राष्ट्रमत
दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक
epaper.dakshinbharat.com

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

शुभ दीपावली

जन-जन में जागे भ्रातृत्व भाव,
हो शमित सभी कलुषित विचार।
मंहगाई होवे न्यून शीघ्र,
हा घर हो धन वैभव अपार।
भारत का गौरव मान बढ़े,
प्रतिभाओं में आए निखार।
कवि मण्डेला का मिशन यही,
हों दूर सभी मन के विकार।।

सहज स्मृति योग

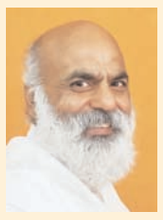

व्यक्ति के मन में जो आध्यात्मिक प्रश्न उठते हैं उनका इस स्तंभ में समाधान प्रस्तुत करने का काम कर रहे हैं गुरुजी श्री नंदकिशोर तिवारी। व्यक्ति की पृष्ठभूमि चाहे किसी भी मत, सम्प्रदाय, मज़हब से हो, सहज स्मृति योग का सरोकार मनुष्य के मात्र आत्मवान होने से है। इसलिए सहज स्मृति योग का ध्यान केवल जिज्ञासु के समाधान पर रहता है। आप भी अपनी जिज्ञासाएं guruji@darpanfoundation.com पर ईमेल या व्हाटस अप (9902912396) द्वारा भेज सकते हैं।

प्रश्न: गुरुजी, मैंने संत-महात्माओं के मुख से सुना है और आपने भी कहा ही है कि ज्ञान के अहंकार से मुक्त रहना अन्य सभी प्रकार के अहंकारों से मुक्त होने से कहीं अधिक दुष्कर है। यदि मेरे अनुभव में मेरे गुरु ही परम सत्य हों तो क्या यह मेरा अहंकार या अज्ञान हो सकता है?

उत्तर: समझ, अनुभव व अनुभूति इन तीनों में से, समझ के स्तर पर ज्ञान का आदान-प्रदान होता है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे बीच होता यह संवाद स्वयं ही है। हम दोनों ही यह समझ पा रहे हैं कि हम क्या समझ रहे हैं। दूसरा क्षेत्र अनुभव का है। सारी सृष्टि और उसके सारे सम्बन्ध धर्म, मजहब, रिलीजंस, संप्रदाय, मत, वाद, संविधान, संगठन, देश, राष्ट्र, परिवार इत्यादि सब अनुभव के आधार पर ही भासित होते हैं । इसलिए इस पर कोई दूसरा प्रश्न चिह्न लगाने का अधिकारी नहीं होता है क्योंकि अनुभव करने का अधिकार और तदोद्भूत कर्त्तव्य करना ही तो मानव गरिमा की मर्यादा का सामाजिक आधार है। अनुभव हरेक का व्यक्तिगत संसार है।अतः इसका प्रमाण हरेक स्वयं ही है। जीवन का सारा संघर्ष इसी क्षेत्र में होता है क्योंकि, अनेक के मेले में होते हुए भी हरेक इस क्षेत्र में अकेला ही होता है। चेतना की तीसरी अवस्था अनुभूति की है। इस अवस्था में आते ही हम तब हैं जब अपने गुरु के अंतिम सत्य होने की और, स्वयं के शिष्य होने की अनुभूति स्थायी होती जाए अज्ञान उत्तरोत्तर समाप्त होता जाए। ऐसी अवस्था में अहंकार तो असंभव ही है न ! क्योंकि, जहाँ सदा गुरु के होने का बोध है वहाँ लघु को अहंकार हो ही कैसे सकता है? इस तरह जब आप तर्क करेंगी तो पायेंगीं कि जब तक गुरु शिष्य सम्बन्ध का बोध है तब तक ज्ञान का अहंकार असंभव है। अब यदि आपके मन में प्रश्न यह है कि क्या गुरु के बजाए ईश्वर को ही सर्वव्यापी मान लेने से अहंकार शमित नहीं हो सकता है ? तो वह भी स्पष्ट करूँगा।

सोने की मांग, अन्य खरीदारी से धनतेरस पर रिकॉर्ड एक लाख करोड़ रुपए खर्च हुए

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कीमतों में भारी बढ़ोतरी के बावजूद सोने और चांदी की जबरदस्त खरीदारी के चलते इस साल धनतेरस पर भारतीय उपभोक्ताओं ने अनुमानित एक लाख करोड़ रुपए खर्च किए।

प्रमुख व्यापारी संगठन कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने शनिवार को यह जानकारी दी। इसके मुताबिक अकेले सोने और चांदी की बिक्री कुल बिक्री का 60,000 करोड़ रुपए रही, जो पिछले साल की तुलना में 25 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है। सोने की कीमतें सालाना आधार पर 60 प्रतिशत बढ़कर 1,30,000 रुपए प्रति 10 ग्राम को पार कर चुकी हैं। इसके बावजूद खरीदार सर्राफा बाजारों में उमड़ पड़े। कैट के आभूषण खंड - अखिल भारतीय

आभूषण एवं स्वर्णकार महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज अरोड़ा ने कहा, पिछले दो दिनों में आभूषण बाजारों में अभूतपूर्व भीड़ देखी गई है। उन्होंने एक बयान में कहा कि दिल्ली के सर्राफा बाजारों में 10,000 करोड़ रुपए से अधिक की बिक्री दर्ज की गई। कार्तिक मास की त्रयोदशी तिथि को मनाया जाने वाला धनतेरस पर्व सोना, चांदी, बर्तन और समृद्धि का प्रतीक अन्य वस्तुओं की खरीदारी के लिए एक शुभ दिन माना जाता है। यह पांच दिवसीय दिवाली उत्सव की शुरुआत का प्रतीक है।

कैट ने कहा कि चांदी की कीमतें भी पिछले साल के 98,000 रुपए से लगभग 55 प्रतिशत बढ़कर 1,80,000 रुपए प्रति किलोग्राम हो गईं। इसके बाद भी उपभोक्ताओं की मजबूत मांग बनी रही। व्यापारी निकाय के अनुसार सर्राफा के अलावा, धनतेरस के दिन बर्तनों और रसोई उपकरणों की बिक्री से 15,000 करोड़ रुपए, इलेक्ट्रॉनिक्स और बिजली के सामानों से 10,000 करोड़ रुपए और सजावटी वस्तुओं तथा धार्मिक सामग्रियों से 3,000 करोड़ रुपए की कमाई हुई। कैट के महासचिव और भाजपा सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने इस वृद्धि का श्रेय वस्तु एवं सेवा कर की दरों में कटौती और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्थानीय स्तर पर निर्मित उत्पादों को बढ़ावा देने को दिया।

टीटीडी ने श्रद्धालुओं को आवास और विशेष दर्शन का वादा करने वाले बिचौलियों से सावधान किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

तिरुपति/भाषा। आंध्र प्रदेश में तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) ने श्रद्धालुओं को श्रीवारी दर्शन, अर्जित सेवा और आवास जैसी मंदिर की सेवाओं से संबंधित मामलों में बिचौलियों का शिकार होने के प्रति आगाह किया है। टीटीडी ने कहा कि ऐसे बिचौलियों द्वारा कई लोगों को धोखा देने के मामले सामने आए हैं।

टीटीडी के अध्यक्ष बी आर नायडू ने कहा कि कुछ दलाल और बिचौलिए विभिन्न तरीकों से श्रीवारी दर्शन का झूठा वादा करके श्रद्धालुओं को ठग रहे हैं। टीटीडी की ओर से जारी एक आधिकारिक विज्ञप्ति के मुताबिक, नायडू ने शनिवार को श्रद्धालुओं से अपील की कि वे श्रीवारी दर्शन, अर्जित सेवा या आवास से संबंधित मामलों में बिचौलियों या दलालों पर भरोसा न करें। कुछ लोग टीटीडी के वरिष्ठ अधिकारी होने का दावा कर रहे हैं अथवा प्रभावशाली पदों पर होने का दावा कर रहे हैं, ताकि श्रद्धालुओं को विशेष दर्शन, अर्जित सेवा और आवास सुविधाओं का आश्वासन देकर लुभाया जा सके। नायडू ने कहा कि पहले भी कई मामले प्रकाश में आ चुके हैं, जहां ऐसे व्यक्तियों ने श्रद्धालुओं से भारी मात्रा में धनराशि एकत्र की और उन्हें ठगा। मंदिर निकाय ने इनमें से कई दलालों की पहचान कर ली है और उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। इसलिए, सभी श्रद्धालुओं से अनुरोध है कि वे श्रीवारी (देवता) दर्शन, अर्जित सेवा और आवास की बुकिंग केवल आधिकारिक टीटीडी वेबसाइट या टीटीडी देवस्थानम मोबाइल ऐप के माध्यम से अपने आधार कार्ड का उपयोग करके करें।

'सनातनी सरकार' के तहत इस साल अलग होगी दिल्ली की दिवाली : रेखा गुप्ता

नई दिल्ली/भाषा। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शनिवार को कहा कि राष्ट्रीय राजधानी में दिवाली अलग होगी, क्योंकि इस वर्ष यह सनातनी सरकार के तहत मनाई जाएगी। मुख्यमंत्री डीडीयू मार्ग स्थित दिल्ली भाजपा के नए कार्यालय में आयोजित दिवाली मिलन कार्यक्रम में बोल रही थीं।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, केंद्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा, दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता, भाजपा सांसद मनोज तिवारी, बांसुरी स्वराज और योगेंद्र चंदोलिया भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। दिल्ली के कैबिनेट मंत्री आशीष सूद और मनजिंदर सिंह सिरसा भी इस कार्यक्रम में मौजूद थे। मुख्यमंत्री गुप्ता ने कहा कि एक सनातनी सरकार के तहत, इस वर्ष दिल्ली में दिवाली की दिव्यता और भव्यता अलग होगी।

अमेरिका के साथ व्यापार वार्ता सौहार्दपूर्ण माहौल में आगे बढ़ रही : गोयल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शनिवार को कहा कि प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर भारत और अमेरिका के बीच बातचीत सौहार्दपूर्ण माहौल में आगे बढ़ रही है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत किसानों, मछुआरों और एमएसएमई के हितों की रक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

गोयल ने यह भी भरोसा जताया कि अमेरिकी शुल्क के कारण वैश्विक चुनौतियों के बावजूद भारत के निर्यात में सकारात्मक वृद्धि होगी। उन्होंने जीएसटी बचत उत्सव पर आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा, भारत के किसानों का, मछुआरों का, भारत के एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम) क्षेत्र का, जब तक देश हितों को पूरी तरह से हम संभाल नहीं लेते, तब तक कोई समझौता नहीं हो सकता। प्रस्तावित समझौते पर

दोनों देशों के बीच बातचीत की प्रगति और इसके कब तक पूरा होने के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में गोयल ने कहा, बातचीत सौहार्दपूर्ण माहौल में चल रही है।

यह टिप्पणी महत्वपूर्ण है क्योंकि अमेरिका भारत के कृषि क्षेत्र में रियायतें चाह रहा है। वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल के नेतृत्व में भारतीय आधिकारियों का दल इस सप्ताह अपने अमेरिकी समकक्षों के साथ व्यापार वार्ता करने के लिए वाशिंगटन में था।

इस वर्ष फरवरी में, भारत और अमेरिका के नेताओं ने अधिकारियों को एक प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) पर बातचीत आगे बढ़ाने को कहा था। उन्होंने समझौते के पहले चरण को 2025 में अक्टूबर-नवंबर तक पूरा करने की समय सीमा तय की है। अब तक पांच दौर की वार्ता पूरी हो चुकी है। पिछले महीने, गोयल ने व्यापार वार्ता के लिए एक आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व न्यूयॉर्क में किया था। गोयल ने भरोसा जताया कि अमेरिकी शुल्क के कारण वैश्विक चुनौतियों के बावजूद भारत के निर्यात में सकारात्मक वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि इस वित्त वर्ष के पहले छह महीनों (अप्रैल-सितंबर) के दौरान देश के वस्तु एवं सेवा निर्यात में वृद्धि दर्ज की गई है। चालू वित् वर्ष 2025-26 के अप्रैल-सितंबर के दौरान यह लगभग पांच प्रतिशत बढ़कर 413.3 अरब डॉलर हो गया। इस अवधि के दौरान भारत का वस्तु निर्यात भी तीन प्रतिशत बढ़कर 220.12 अरब डॉलर रहा। उन्होंने कहा, दुनिया भर में हमारी वस्तुओं और सेवाओं की मांग है और भारत इस वृद्धि के रास्ते पर आगे बढ़ता रहेगा और हमें विश्वास है कि 2025-26 में देश के निर्यात में सकारात्मक वृद्धि होगी।

देवी-देवताओं और राष्ट्रीय हस्तियों के नाम बेचकर 'कॉर्पोरेट हिंदुत्व' का खेल खेल रही भाजपा : कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मुंबई/भाषा। कांग्रेस की महाराष्ट्र इकाई ने शनिवार को आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का हिंदुत्व ब्रांड 'कॉर्पोरेट व लाभ-केंद्रित' हो गया है, जिसमें देवी-देवताओं के नामों और राष्ट्रीय प्रतीकों को 'पैसे के लिए बेचा' जा रहा है और राजनीतिक लाभ कमाया जा रहा है।

कांग्रेस प्रवक्ता सचिन सावंत ने मुंबई मेट्रो स्टेशनों का हवाला देते हुए आरोप लगाया कि भाजपा के 'कॉर्पोरेट हिंदुत्व' ने देवी-देवताओं और राष्ट्रीय हस्तियों को सिर्फ कारोबार का साधन बना दिया है। सावंत ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि शहर के कई मेट्रो स्टेशनों का नाम कॉर्पोरेट संस्थाओं के नाम पर रखा गया है, जिनमें कोटक छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल, आईसीआईसीआई लोम्बार्ड सिद्धिविनायक, एचडीएफसी लाइफ महालक्ष्मी और निप्पॉन इंडिया एमएफ आचार्य अत्रे शामिल हैं।

सावंत ने सत्तारूढ़ भाजपा, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और उप-मुख्यमंत्रियों एकनाथ शिंदे व अजित पवार से जवाब मांगा, जो लोग हर भाषण में छत्रपति शिवाजी महाराज का नाम लेते हैं, उन्हें स्पष्ट करना चाहिए कि क्या वे उनके नाम के आगे कॉर्पोरेट ब्रांड लगाने को मंजूरी देंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा नाम बदलने की राजनीति के जरिए बेरोजगारी, महंगाई और किसानों की समस्याओं जैसे मुद्दों से जनता का ध्यान भटका रही है।

सावंत ने आरोप लगाया, भाजपा ने जवाहरलाल नेहरू और संजय गांधी जैसे राष्ट्रीय नेताओं के नाम सार्वजनिक संस्थानों से हटा दिए, जबकि कॉर्पोरेट प्रायोजन के लिए दूसरों के नाम बदल दिए हैं। उन्होंने भारत के पहले प्रधानमंत्री और कांग्रेस के अन्य नेताओं के प्रति अपनी असहिष्णुता दिखाई गई है। उन्होंने कहा, हवाई अड्डों व बंदरगाहों के बाद धार्मिक और विरासत स्थलों की भी कॉर्पोरेट्स को नीलामी की जा रही है। यह भाजपा के पाखंड को उजागर करता है। भाजपा, एक ऐसी पार्टी है, जो 'सनातन धर्म' की बात तो करती है, लेकिन रुपयों के लिए पवित्र नामों को बेचती है। कांग्रेस नेता ने कहा कि सरकार जल्द ही नई मेट्रो-3 या 'एक्वा लाइन' पर स्थित कालबादेवी और शीतलादेवी स्टेशनों के लिए भी प्रायोजकों की तलाश कर सकती है।

उन्होंने कहा, भाजपा का तथाकथित हिंदुत्व वहीं खत्म होता है, जहां कॉर्पोरेट हित शुरू होते हैं। सावंत ने कहा, यह विकास नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, आस्था और स्वाभिमान की बिक्री है। उन्होंने कहा, महाराष्ट्र के लोग राष्ट्रीय प्रतीकों और देवी देवताओं का अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे।

तेलंगाना में पिछड़ा वर्ग आरक्षण पर उच्च न्यायालय की रोक के खिलाफ आहूत बंद शांतिपूर्ण रहा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

हैदराबाद/भाषा। तेलंगाना में स्थानीय निकाय चुनाव में पिछड़ा वर्गों को 42 प्रतिशत आरक्षण देने पर उच्च न्यायालय के स्थगन आदेश के विरोध में शनिवार को पिछड़ा वर्ग संयुक्त कार्य समिति द्वारा आहूत राज्यव्यापी बंद शांतिपूर्ण रहा। तेलंगाना राज्य में सत्तारूढ़ कांग्रेस, विपक्षी भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस), भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बंद के आह्वान का समर्थन किया था।

पिछड़ा वर्ग संयुक्त कार्य समिति के अध्यक्ष एवं भाजपा के राज्यसभा सदस्य आर. कृष्णैया ने पहले ही सभी राजनीतिक दलों और नागरिक समाज संगठनों से बंद के लिए समर्थन मांगा था। आपातकालीन और आवश्यक सेवाओं को छोड़कर, सभी क्षेत्रों से बंद में सहयोग करने का अनुरोध किया गया था। तेलंगाना उच्च न्यायालय ने स्थानीय निकाय चुनाव में पिछड़े वर्गों को 42 प्रतिशत आरक्षण देने से जुड़े सरकारी आदेश पर नौ अक्टूबर को अंतरिम रोक लगा दी थी। विभिन्न राजनीतिक दलों और पिछड़े वर्गों से जुड़े संगठनों के नेताओं ने तेलंगाना राज्य सड़क परिवहन निगम के बस डिपो के सामने धरना दिया और वाहनों को बाहर निकलने से रोका।

कृष्णैया ने बताया कि बंद सफल रहा क्योंकि सभी शैक्षणिक संस्थान, दुकानें और अन्य प्रतिष्ठान बंद रहे। उन्होंने कहा, बंद पूरी तरह सफल रहा और यह ऐतिहासिक था। गांवों में भी बंद का असर रहा, जहां राजनीतिक दलों और स्वयंसेवी संगठनों सहित सभी ने इसका समर्थन किया। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि बंद शांतिपूर्ण रहा। कांग्रेस ने कहा कि तेलंगाना इकाई के नेताओं, मंत्रियों, सांसदों, विधायकों, विधान परिषद सदस्यों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन में भाग लिया। विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी (टीपीसीसी) के अध्यक्ष बी महेश कुमार गौड़ ने कहा कि लोगों ने शांतिपूर्वक और स्वेच्छा से बंद का पालन किया। मंत्रियों पोन्नम प्रभाकर, वाकीति श्रीहरि, सीताक्का, कोंडा सुरेखा और पार्टी सांसद अनिल यादव ने हैदराबाद में बंद में भाग लिया जबकि मंत्री तुम्मला नागेश्वर राव ने सत्तुपल्ली में भाग लिया।

इस दिवाली अपनों को उपहार में दीजिए फास्टैग वार्षिक पास: एनएचएआई

नई दिल्ली/भाषा। सरकारी स्वामित्व वाली एनएचएआई ने शनिवार को कहा कि फास्टैग वार्षिक पास अब राजमार्गयात्रा ऐप के जरिए किसी को भी उपहार में दिया जा सकता है। इसके लिए ऐप पर 'पास जोड़ें' विकल्प पर क्लिक करते उस व्यक्ति का वाहन नंबर और संपर्क विवरण जोड़ना होगा, जिसे वे फास्टैग वार्षिक पास उपहार में देना चाहते हैं।

एनएचएआई ने एक बयान में कहा कि ओटीपी सत्यापन के बाद उस वाहन से जुड़े फास्टैग पर वार्षिक पास सक्रिय हो जाएगा।

फास्टैग वार्षिक पास राष्ट्रीय राजमार्ग उपयोगकर्ताओं को एक सुविधाजनक और किफायती यात्रा विकल्प देता है और यह भारत में लगभग 1,150 टोल प्लाजा पर लागू है।

वार्षिक पास एक साल के लिए वैध है और इस दौरान 200 टोल प्लाजा पार किया जा सकता है। इसके लिए 3,000 रुपए का एकमुश्त शुल्क भुगतान करना होगा और फास्टैग को बार-बार रिचार्ज करने की जरूरत नहीं होगी। यह पास वैध फास्टैग वाले सभी गैर-वाणिज्यिक वाहनों के लिए लागू है।

राजमार्गयात्रा ऐप के माध्यम से एकमुश्त शुल्क का भुगतान करने के बाद, वाहन से जुड़े मौजूदा फास्टैग पर वार्षिक पास दो घंटे के भीतर सक्रिय हो जाता है।

आदि कैलाश यात्रा पर इस वर्ष अब तक रिकॉर्ड 31,187 श्रद्धालु पहुंचे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पिथौरागढ़/भाषा। उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के धारचूला क्षेत्र में स्थित व्यास घाटी के उच्च हिमालयी क्षेत्र में भगवान शिव के पवित्र धाम आदि कैलाश की इस वर्ष अब तक सर्वाधिक 31,187 श्रद्धालु यात्रा कर चुके हैं। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी।

यात्रा के नोडल अधिकारी एवं धारचूला के उप-जिलाधिकारी जितेंद्र वर्मा ने बताया कि पिछले वर्ष 29,352 श्रद्धालुओं ने आदि कैलाश यात्रा की थी। उन्होंने कहा, अक्टूबर 2023 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आगमन के बाद यात्रा को बड़ा प्रोत्साहन मिला और उसी वर्ष 10,023 तीर्थयात्री आदि कैलाश के दर्शन को पहुंचे थे। उन्होंने यह भी बताया कि प्रधानमंत्री के दौरे से पूर्व आदि कैलाश आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या कभी ढाई हजार का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाई थी। उदाहरण के लिए 2022 में मात्र 1,757 श्रद्धालु आदि कैलाश पहुंचे थे।

उप-जिलाधिकारी वर्मा ने कहा, मानसून के दौरान धारचूला आधार शिविर से ज्योलिंगकांग तक मार्ग पर भूस्खलन के कारण यात्रा में व्यवधान अवश्य आया, लेकिन इसके बावजूद श्रद्धालुओं का उत्साह कम नहीं हुआ। उन्होंने बताया कि अभी और श्रद्धालुओं के आने की संभावना है क्योंकि यात्रा का दूसरा चरण 31 अक्टूबर तक जारी रहेगा। इसके बाद मार्ग पर बर्फबारी के कारण यात्रा बाधित हो जाती है। आदि कैलाश यात्रा की शुरुआत वर्ष 1981 में कैलाश मानसरोवर यात्रा के साथ हुई थी, क्योंकि यहां तीर्थयात्रियों को कम खर्च और कम कठिनाई में भगवान शिव के दर्शन प्राप्त हो जाते हैं।

दिल्ली की भाजपा सरकार राजधानी को अव्यवस्था की ओर धकेल रही है : केजरीवाल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली की भाजपा सरकार पर राजधानी को अव्यवस्था की ओर धकेलने का आरोप लगाया है।

केजरीवाल ने आरोप लगाया कि आप के शासनकाल में दिल्ली में एक दशक के दौरान हुई प्रगति को भाजपा ने खत्म कर दिया है।

केजरीवाल ने शनिवार को पार्टी मुख्यालय में दिवाली मिलन समारोह को संबोधित करते हुए दावा किया कि जिस शहर में कभी विश्वस्तरीय स्कूल, बेहतर अस्पताल, स्वच्छ पानी और मुफ्त बिजली थी, वहां अब टूटी हुई सड़कें, कूड़े के ढेर और बहते हुए सीवर हैं।

केजरीवाल ने दावा किया कि दिल्ली के लोगों पर हजारों रुपए के बिजली और पानी के बिल का बोझ पड़ रहा है, जबकि कई इलाकों में पानी की आपूर्ति ठप हो गई है।

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, लोगों ने यह सोचकर भाजपा को वोट दिया था कि उपराज्यपाल, केंद्र और दिल्ली सरकार एक ही पार्टी के अधीन होने से शासन में सुधार होगा। लेकिन, उन्होंने (भाजपा ने) छह महीने में दिल्ली को बर्बाद कर दिया है। उन्होंने दावा किया कि आम आदमी पार्टी (आप) की राजनीति सत्ता पर नहीं, बल्कि सेवा पर केंद्रित है।

जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल करने के लिए भाजपा के साथ गठबंधन नहीं करेंगे : अब्दुल्ला

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

श्रीनगर/भाषा। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने शनिवार को कहा कि वह केंद्र शासित प्रदेश का राज्य का दर्जा बहाल करने के लिए भारतीय जनता पार्टी के साथ गठबंधन नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी का अतीत में दूसरों द्वारा की गई ''गलतियों'' को दोहराने का कोई इरादा नहीं है।

अब्दुल्ला ने कहा कि यदि राज्य का दर्जा बहाल करना भाजपा के जम्मू-कश्मीर में सत्ता में आने पर निर्भर है तो राष्ट्रीय पार्टी को ईमानदारी से ऐसा कहना चाहिए। उन्होंने कहा, यदि लोगों के साथ यही समझौता किया जाना है, तो भाजपा को ईमानदार होना चाहिए, क्योंकि भाजपा ने अपने घोषणापत्र में तथा संसद और उच्चतम न्यायालय से किए गए अपने वादों में कभी नहीं कहा कि राज्य का दर्जा जम्मू-कश्मीर में भाजपा के सत्ता में आने पर निर्भर है। अब्दुल्ला ने कहा, यदि ऐसा है, तो मुझे लगता है कि भाजपा को ईमानदार होना चाहिए, उसे हमें बताना चाहिए कि जब तक जम्मू-कश्मीर में गैर-भाजपा सरकार है, तब तक आपको राज्य का दर्जा नहीं मिलेगा। फिर हम तय करेंगे कि हम क्या करना चाहते हैं। अब्दुल्ला ने हालांकि कहा कि ''भाजपा के साथ गठबंधन का सवाल ही नहीं उठता। जब संवाददाता सम्मेलन में अब्दुल्ला से पूछा गया कि क्या उनकी पार्टी जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करने के लिए भाजपा के साथ गठबंधन करेगी, तो उन्होंने कहा ''नहीं। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर 2015 में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी)-भाजपा गठबंधन के ''दुष्परिणामों'' को अभी भी झेल रहा है।

हसदेव अरण्य क्षेत्र से जुड़ा उच्च न्यायालय का फैसला खतरनाक : कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने शनिवार को आरोप लगाया कि छत्तीसगढ़ के हसदेव अरण्य क्षेत्र से संबंधित राज्य उच्च न्यायालय का हालिया फैसला खतरनाक है और इससे वन अधिकार अधिनियम की बुनियाद कमजोर होती है। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने हसदेव अरण्य क्षेत्र के एक गांव के निवासियों को दिए गए सामुदायिक वन अधिकारों को रद्द करने को चुनौती देने वाली एक याचिका को पिछले सप्ताह खारिज कर दिया।

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, राज्य में मोदानी सरकार के सत्ता में आने के बाद से दो वर्षों में हसदेव अरण्य में हुई अस्वीकार्य और अभूतपूर्व घटनाओं की एक शृंखला में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय की एकल न्यायाधीश पीठ ने वन अधिकार अधिनियम, 2006 (एफआरए) के तहत ग्राम समुदाय को दिए गए वन अधिकारों को रद्द कर दिया है। पेश किए गए असाधारण कारणों में से एक यह है कि भूमि को पहले खनन के लिए दिया गया था और उस पर कोई चुनौती नहीं दी गई थी, इसलिए वन अधिकारों का कोई दावा नहीं बचा है। उन्होंने दावा किया, लाभार्थी कौन है, इसको लेकर कोई रहस्य नहीं है। मोदानी है तो मुमकिन है।

'सनातनियों' की संगति से बचें, आरएसएस और संघ परिवार से सावधान रहें : सिद्दरामय्या

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मैसूरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरामय्या ने शनिवार को लोगों से 'सनातनियों' की संगति से बचने तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और संघ परिवार से सावधान रहने की अपील की। सिद्दरामय्या ने कहा कि आरएसएस और संघ परिवार ने ऐतिहासिक रूप से डॉ. भीम राव आंबेडकर और उनके द्वारा बनाये गए संविधान का विरोध किया है।

मैसूरु विश्वविद्यालय के रजत जयंती समारोह का उद्घाटन करने और नये ज्ञान दर्शन भवन का लोकार्पण करने के बाद सिद्दरामय्या ने कहा, ''अपनी संगति ठीक रखें। उन लोगों से जुड़ें जो समाज के लिए खड़े हैं, न कि उन लोगों के साथ जो सामाजिक परिवर्तन का विरोध करते हैं या 'सनातनियों' के साथ हैं।''

हाल में प्रधान न्यायाधीश बी.आर. गवई की ओर जूता फेंके जाने की घटना का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, ''एक सनातनी द्वारा प्रधान न्यायाधीश की ओर जूता फेंकना यह दर्शाता है कि समाज में अब भी सनातनी और रूढ़िवादी तत्व मौजूद हैं। इस कृत्य की निंदा केवल दलितों को ही नहीं, बल्कि सभी को करनी चाहिए। तभी हम कह सकते हैं कि समाज बदलाव की राह पर आगे बढ़ रहा है।''

सिद्दरामय्या ने यह भी आरोप लगाया कि आरएसएस और संघ परिवार ने आंबेडकर के संविधान का विरोध किया था और अब भी कर रहे हैं। उन्होंने लोगों से सतर्क रहने का आग्रह किया। अंबेडकर को एक दूरदर्शी व्यक्ति बताते हुए सिद्दरामय्या ने कहा, ''अंबेडकर ने समाज को समझने के लिए ज्ञान अर्जित किया और जीवन भर समाज को बदलने के लिए इसका उपयोग किया।''

भाजपा और संघ परिवार पर अंबेडकर के नाम पर झूठा प्रचार करने का आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा, ''वे झूठ फैला रहे हैं कि कांग्रेस ने चुनावों में आंबेडकर को हराया। लेकिन सच्चाई वही है जो अंबेडकर ने खुद अपने हाथ से लिखा था -- 'सावरकर और डांगे ने मुझे हराया।' संघ परिवार के झूठ को उजागर करने के लिए ऐसी सच्चाई को समाज के सामने रखा जाना चाहिए।''

अंबेडकर स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के बारे में सिद्दरामय्या ने कहा, ''मैंने इसकी स्थापना इसलिए की ताकि अंबेडकर पर अध्ययन करने वाले लोग उनके रास्ते पर चल सकें। अंबेडकर बेजोड़ हैं। दूसरे अंबेडकर कभी पैदा नहीं होंगे, लेकिन सभी को उनके आदर्शों का पालन करना चाहिए और उनके पदचिह्नों पर चलना चाहिए।''

राष्ट्र के प्रति अंबेडकर के योगदान की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, ''उन्होंने विश्व के सभी संविधानों का अध्ययन किया और उन्हें आत्मसात किया तथा भारत को उसके समाज के लिए सर्वोत्तम संविधान दिया।'' उन्होंने कहा कि वह बुद्ध, बसव (12वीं सदी के समाज सुधारक) और अंबेडकर के विचारों में विश्वास करते हैं। उन्होंने कहा, ''इसलिए मुझे उम्मीद है कि तार्किकता और वैज्ञानिक सोच बढ़ेगी। ऐसा व्यक्ति मत बनो जो विज्ञान तो पढ़ता है लेकिन अंधविश्वास पर अमल करता है।''

सिद्दरामय्या ने मैसूरु विश्वविद्यालय के अंबेडकर अध्ययन केंद्र, जिसके 25 वर्ष पूरे हो गए हैं, और 'विश्व ज्ञानी अंबेडकर सभा भवन' के उद्घाटन की भी सराहना की और इसे एक स्वागत योग्य ''कदम'' बताया। मुख्यमंत्री ने कहा, ''असमान अवसरों ने असमानता पैदा की है। शिक्षा किसी की पैतृक संपत्ति नहीं है। लोगों को अवसर की आवश्यकता है। अवसर मिलने पर, वे विद्वान और बुद्धिजीवी बन सकते हैं।'' उन्होंने कहा, अंबेडकर एक महान दूरदर्शी थे जिन्होंने अपने ज्ञान का उपयोग सामाजिक परिवर्तन के लिए किया।''

आरएसएस की प्रचार सामग्री हटाये जाने को लेकर भाजपा ने मंत्री प्रियंक खरगे की आलोचना की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कलबुर्गी। कर्नाटक के चित्तपुर तालुक में एक बड़े कार्यक्रम से पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की प्रचार सामग्री हटाए जाने को लेकर प्रदेश भाजपा ने शनिवार को मंत्री प्रियांक खरगे पर निशाना साधा, जबकि कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि आरएसएस ने कार्यक्रम के लिए अनुमति नहीं ली थी। आरएसएस ने अपना 'पथ संचलन' कार्यक्रम निर्धारित किया था, जिसे उसके शक्ति प्रदर्शन के तौर पर देखा जा रहा है। यह ऐसे समय में हुआ है जब राज्य की कांग्रेस सरकार ने सार्वजनिक और सरकारी स्थलों पर कार्यक्रम आयोजित करने के नियमों को लागू करने का फैसला किया है। खरगे ने कुछ दिन पहले मुख्यमंत्री के समक्ष इस तरह के प्रतिबंधों की जरूरत पर जोर दिया था।

शनिवार को चित्तपुर तालुक में आरएसएस के झंडे, बैनर और पोस्टर हटा दिए गए। सूचना प्रौद्योगिकी/जैव प्रौद्योगिकी मंत्री खरगे चित्तपुर विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। मंत्री ने हाल में मुख्यमंत्री सिद्दरामय्या को पत्र लिखकर सरकारी संस्थानों और सार्वजनिक परिसरों में आरएसएस की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाने और सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों को इसमें भाग लेने से रोकने का अनुरोध किया था। कर्नाटक मंत्रिमंडल ने बृहस्पतिवार को निजी संगठनों को सरकारी स्कूलों, कॉलेजों और सार्वजनिक स्थानों पर अधिकारियों की पूर्व अनुमति के बिना कोई भी कार्यक्रम आयोजित करने से प्रतिबंधित करने का फैसला किया।

खरगे की आलोचना करते हुए, भाजपा नेता आर. अशोक ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''क्या चित्तपुर भारत में है या यह खरगे परिवार का गणराज्य है?'' इसके जवाब में, खरगे ने पूछा, ''क्या (आरएसएस) ने इसके लिए अनुमति ली है?'' उन्होंने कहा कि अधिकारियों की अनुमति के बिना पोस्टर और बैनर लगाने के लिए उन पर जुर्माना भी लगाया गया था।

खरगे ने कहा, मुझे जो जानकारी मिली है, उसके अनुसार उन्होंने (आरएसएस) अपने कार्यक्रम की सूचना तो दी है, लेकिन इसकी अनुमति नहीं ली। क्या आरएसएस का झंडा भारत का राष्ट्रीय ध्वज है? वे अवैध रूप से झंडा लगा रहे हैं और इसके लिए हमें दोषी ठहरा रहे हैं।

उन्होंने दावा किया कि एक भाजपा पदाधिकारी ने उन्हें धमकी देते हुए कहा कि आरएसएस के स्वयंसेवक उनके घर में घुसकर उनकी पिटाई करेंगे।

खरगे ने कहा, ''मैं पुलिस महानिदेशक के पास शिकायत देने जा रहा हूं।'' कलबुर्गी में बढ़ते तनाव के बीच, मुख्यमंत्री सिद्दरामय्या ने कहा कि उन्हें इस मामले की कोई जानकारी नहीं है और जल्द ही विस्तृत जानकारी मिल जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अनुमति लेनी होगी। उनके अनुसार, सार्वजनिक स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अनुमति लेने का नियम तत्कालीन मुख्यमंत्री जगदीश शेट्टर (2013 में) द्वारा लाया गया था, जबकि कांग्रेस सरकार ने इसे दोहराया है।

सिद्दरामय्या ने आश्चर्य जताया कि जब शेट्टर ने यह नियम लाया था, तब कोई विरोध क्यों नहीं हुआ। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया, ''हमारा निशाना आरएसएस बिल्कुल नहीं है। यह किसी भी संगठन के बारे में है।''

यह पूछे जाने पर कि क्या भाजपा राजनीति कर रही है, सिद्दरामय्या ने कहा, भाजपा हमेशा राजनीति करती है। इसके अलावा वे और क्या कर सकते हैं? वे कभी गरीबों के लिए काम नहीं करते। वे बस राजनीति करते हैं।'' उन्होंने कानून-व्यवस्था में किसी भी तरह की गड़बड़ी की संभावना से इनकार करते हुए कहा कि इसकी जांच के लिए पुलिस मौजूद है।

राज्य विधानसभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक ने कहा कि आरएसएस के 'पथ संचलन' के लिए नगरपालिका से अनुमति पत्र प्राप्त किया गया था और बैनर और झंडे लगाने के लिए नगरपालिका को विज्ञापन कर का भुगतान किया गया था तथा रसीद भी ली गई। उन्होंने कांग्रेस नेता पर हमला करते हुए कहा, ''इन सबके बावजूद, मंत्री प्रियंक खरगे जी, आपने आधी रात को भगवा बैनर और झंडे हटा दिए। आप खुद को चित्तापुर का निजाम समझते हैं या रजाकार?''

'निट्टे' में हाइड्रोजन उत्पादन और उपयोग का प्रदर्शन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के कार्बन फुटप्रिंट को कम करने की आवश्यकता ने ग्रीन हाइड्रोजन को ऊर्जा परिवर्तन के लिए एक आशाजनक समाधान बना दिया है। हाइड्रोजन का उत्पादन करने का सबसे पर्यावरण अनुकूल तरीका अक्षय ऊर्जा का उपयोग करके जल-आधारित उत्पादन है। हालाँकि, मीठे पानी की उपलब्धता सीमित है, इसलिए मीठे पानी के बजाय अपशिष्ट जल पर स्विच करना इस समस्या का प्रमुख समाधान है। यह जानकर गर्व और प्रसन्नता की बात है कि निट्टे मीनाक्षी प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगलूरु ने कई शोध करने के बाद, एपीएएस ऊर्जा प्रौद्योगिकी के साथ सहयोग किया है, और शनिवार को अपने परिसर में अपशिष्ट जल उपचार संयंत्र में हाइड्रोजन उत्पादन और उपयोग का एक सफल प्रदर्शन आयोजित किया है। कर्नाटक सरकार के कर्नाटक अक्षय ऊर्जा विकास लिमिटेड के प्रबंध निदेशक के.पी. रुद्रप्पैया ने यह विचार व्यक्त किए।

वे निट्टे डीम्ड विश्वविद्यालय के एक घटक कॉलेज, निट्टे मीनाक्षी प्रौद्योगिकी संस्थान के सीवेज उपचार संयंत्र में नवाचार के लाइव प्रदर्शन का उद्घाटन और अवलोकन करने के बाद बोल रहे थे। अटल सामुदायिक नवाचार केंद्र-एनएमआईटी फाउंडेशन (एसीआईसी-एनएमआईटी फाउंडेशन) ने एपीएएस एनर्जी टेक्नोलॉजी के सहयोग से अपशिष्ट जल से स्वच्छ हाइड्रोजन उत्पादन के क्षेत्र में नए नवाचारों का मार्ग प्रशस्त करने के लिए यह प्रयोग किया।

उन्होंने आगे कहा कि कर्नाटक अक्षय ऊर्जा विकास लिमिटेड, पारिस्थितिक संतुलन को नुकसान पहुँचाए बिना हाइड्रोजन अन्वेषण के क्षेत्र में रचनात्मक नवाचारों को प्रोत्साहित और वित्तपोषित करेगा। प्रदर्शन देखने वाले अन्य प्रतिष्ठित उद्योगपतियों और वैज्ञानिकों में शामिल थे - बोरुका समूह के अध्यक्ष एस.एन. अग्रवाल; इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार इंजीनियर्स संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सी.वी. रविशंकर; बोइंग के उद्योग विशेषज्ञ हर्षा आर.एम.; केंद्रीय विद्युत अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. मल्लिकार्जुन राव; भारतीय विज्ञान संस्थान की डॉ. अर्चना मागड़ी और डॉ. नवनीत कुमार गुप्ता; अटल सामुदायिक नवाचार केंद्र-एनएमआईटी फाउंडेशन के प्रमुख डॉ. शिव प्रताप सिंह यादव और एनएमआईटी आइडिया लैब के प्रमुख डॉ. एल. हरीश कुमार शामिल हुए। इस अवसर पर वरिष्ठ शिक्षाविद् प्रो. प्रह्लाद एन. टेंगली भी उपस्थित थे।

तमिलनाडु के कई हिस्सों में भारी बारिश

चेन्नई। तमिलनाडु के कई हिस्सों में शनिवार को भी भारी बारिश होने से विभिन्न जलाशयों में पानी की मात्रा बढ़ गई। उत्तर-पूर्वी मानसून के कारण राज्य में बारिश हो रही है। राज्य के दक्षिणी हिस्सों के जलाशयों में पानी की मात्रा बढ़ गई वहीं बारिश के कारण चेन्नई में कुछ स्थानों पर जनभराव हो गया। मौसम विभाग के अनुसार, उत्तर-पूर्वी मानसून 16 अक्टूबर को तमिलनाडु पहुंचा। इस वजह से पश्चिमी घाट और दक्षिणी जिलों में मध्यम से भारी बारिश होने का अनुमान है वहीं चेन्नई सहित तटीय क्षेत्रों में मध्यम वर्षा जारी रहेगी।

दक्षिण-पूर्व अरब सागर और उससे सटे लक्षद्वीप के ऊपर चक्रवाती परिसंचरण बना हुआ है और इसके प्रभाव से क्षेत्र में निम्न दबाव का क्षेत्र बनने की संभावना है।

दक्षिण पश्चिम रेलवे
निविदा सूचना सं: CAO/CN/BNC/148/2025
दिनांक: 13.10.2025
भारत के राष्ट्रपति की ओर से अधोहस्ताक्षरी निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदाएं आमंत्रित करते हैं:

कार्य का नाम	अनुमानित लागत
दक्षिण पश्चिम रेलवे के अंतर्गत विभिन्न परियोजनाओं के लिए एकीकृत परियोजना प्रबंधन एवं सूचना प्रणाली (पीएमआईएस) का डिजाइन, अनुकूलन, कार्यान्वयन, संचालन एवं रखरखाव सहायता। (निविदा संदर्भ सं.: PMIS-SWR-01)	रु. 6,66,00,380/-

निविदाओं जमा करने की अंतिम तिथि: 25.11.2025, 15:00 बजे तक
विवरण के लिए लॉग ऑन करें www.ireps.gov.in में
उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/कार्य/ बेंगलूरु छावनी
PUB/564/AAMO/PRB/SWR/2025-26
अनारक्षित टिकटों की बुकिंग में आसानी के लिए गूगल प्ले स्टोर से यूटीएस मोबाइल ऐप डाउनलोड करें
South Western Railway - SWR | SWRRLY | SWRAILWAYHQ | sw_railways

दक्षिण पश्चिम रेलवे
ई-प्रोक्यूरमेंट (आईआरईपीएस)
निविदा सूचना सं: HE-17-2025-26
भारत के राष्ट्रपति की ओर से अधोहस्ताक्षरी निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदाएं आमंत्रित करते हैं:

क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत
1	वास्को-ड-गामा कोचिंग डिपो पर पिट लाईनों के लिए प्रस्तावित मरम्मत / पुनरनिर्माण तहत विद्युत की व्यवस्था।	रु. 58,52,404.64
2	हुबली विभाग में 22 एलसी गेटों पर आने वाली ट्रेन के सामने सिग्नलों को खाली होने से बचाने के लिए मिनी आईपीएस प्रणाली और 21 एलसी गेटों के लिए आरटीयू के संबंध में विद्युत व्यवस्था का प्रावधान।	रु. 22,32,339.60
3	हुबली विभाग पर विभिन्न स्टेशनों पर हाई मास्ट इंस्टॉलेशन के लिए सुधारण कार्य।	रु. 49,00,529.80
4	हुबली, कोचिंग यार्ड पर एचटी स्विचगियर सिस्टम, हुबली स्टेशन पर सीआरएच और मैन पॉवर हाऊस सबस्टेशनों के लिए सुधारण कार्य।	रु. 50,56,818.12

निविदाओं जमा करने की अंतिम तिथि: 12.11.2025, 11:00 बजे तक
विवरण के लिए लॉग ऑन करें www.ireps.gov.in में
वरिष्ठ विभागीय इलेक्ट्रिकल इंजीनियर/समन्वय हुबली
PUB/566/AAMO/PRB/SWR/2025-26
अनारक्षित टिकटों की बुकिंग में आसानी के लिए गूगल प्ले स्टोर से यूटीएस मोबाइल ऐप डाउनलोड करें
South Western Railway - SWR | SWRRLY | SWRAILWAYHQ | sw_railways

'वोट चोरी' मामला : अलंद में पूर्व भाजपा विधायक गुत्तेदार के घर के पास जले हुए मतदाता रिकॉर्ड मिले

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कलबुर्गी। जिले में पूर्व भाजपा विधायक सुभाष गुत्तेदार के आवास के पास शनिवार को जले हुए मतदाता रिकॉर्ड के ढेर मिले। विशेष जांच दल (एसआईटी) ने 2023 के विधानसभा चुनाव के दौरान अलंद विधानसभा क्षेत्र में कथित 'वोट चोरी' की जांच तेज कर दी है। गुत्तेदार ने कहा कि जले हुए मतदाता रिकॉर्ड में कुछ भी संदिग्ध नहीं है और उन्होंने इसके लिए अपने सफाई कर्मियों को जिम्मेदार ठहराया।

उन्होंने शनिवार को यहां संवाददाताओं से कहा, ''त्योहार से पहले सफाई अभियान के तहत, हमारे कर्मचारियों ने इसे बाहर फेंक दिया और जला दिया। अगर हमारा कोई दुर्भावनापूर्ण इरादा होता, तो हम इसे अपने घर से दूर जलाते। कोई घर के सामने ऐसा क्यों करेगा? इसके पीछे कोई छिपी हुई मंशा नहीं थी।''

सूत्रों ने बताया कि एसआईटी ने शुक्रवार को गुत्तेदार, उनके बेटों और एक चार्टर्ड अकाउंटेंट से जुड़े कई ठिकानों पर छापेमारी की थी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा बड़े पैमाने पर 'वोट चोरी' का आरोप लगाने के बाद एसआईटी का गठन किया गया था। गांधी ने अपने दावे के समर्थन में 2023 के कर्नाटक विधानसभा चुनाव के दौरान अलंद निर्वाचन क्षेत्र का हवाला दिया था।

कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि ''कांग्रेसी मतदाताओं'' के नाम मतदाता सूची से हटाने के लिए कुछ वास्तविक मतदाताओं की ओर से फर्जी फोन कॉल किए गए थे। कांग्रेस नेताओं ने दावा किया कि धोखाधड़ी का समय पर पता चलने से उनके उम्मीदवार बी आर पाटिल की जीत हुई और भाजपा उम्मीदवार सुभाष गुत्तेदार की हार हुई।

कलपक्कम स्थित 'फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर' के 40 वर्ष पूरे, भारत की परमाणु क्षमता का प्रदर्शन

चेन्नई। इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केंद्र (आईजीसीएआर) में 'फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर' ने शनिवार को अपनी 40वीं वर्षगांठ मनाई, जो भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में एक मील का पत्थर है। चेंगलपट्टू जिले में बंगाल की खाड़ी के निकट स्थित फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर' स्वदेशी वैज्ञानिक उत्कृष्टता और तकनीकी नवाचार का एक 'उत्कृष्ट प्रमाण' है। आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया, फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर (1985 में) पहली क्रिटिकलिटी' प्राप्त करने की 40वीं वर्षगांठ, फास्ट रिएक्टर प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता की दिशा में भारत की एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

किसी परमाणु रिएक्टर में 'क्रिटिकलिटी' वह स्थिति है, जहां परमाणु विखंडन श्रृंखला अभिक्रिया प्राप्त की जाती है और उसे बनाए रखा जाता है। विज्ञप्ति के अनुसार, परीक्षण प्रतिष्ठान के रूप में डिजाइन किए गए इस रिएक्टर ने बहुमूल्य परिचालन अनुभव प्रदान कर तथा भविष्य के फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों के लिए आवश्यक ईंधन और संरचनात्मक सामग्री पर विकिरण अध्ययन के लिए एक बहुमुखी अनुसंधान और विकास मंच के रूप में कार्य करके भारत के फास्ट रिएक्टर' कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

परमाणु ऊर्जा आयोग (एईसी) के पूर्व अध्यक्ष के. एन. व्यास ने आईजीसीएआर के निदेशक सी जी करहाडकर सहित वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मुख्य अतिथि के रूप में समारोह में भाग लिया। व्यास ने रिएक्टर की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में योगदान देने वाली टीमों की सराहना की तथा तीव्र रिएक्टर प्रौद्योगिकी में भारत की स्वदेशी क्षमताओं को प्रदर्शित करने में इसकी भूमिका पर जोर दिया।

विज्ञप्ति के अनुसार, अपने संबोधन में आईजीसीएआर के निदेशक सी जी करहाडकर ने केंद्र की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और पिछले चार दशकों में रिएक्टर के सुरक्षित एवं विश्वसनीय परिचालन के निरंतर रिकॉर्ड को रेखांकित किया।

अधिकारियों ने रिएक्टर के चार दशकों के अनुसंधान, प्रतिबद्धता और तकनीकी उत्कृष्टता पर आधारित एक फोटो प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया। विज्ञप्ति में कहा गया कि इस अवसर पर फॉस्फोरस-32 (पी-32) का सफल पृथक्करण भी किया गया। यह रेडियो आइसोटोप रेडियोफार्मास्युटिकल अनुप्रयोगों के लिए उपयोग किया जाता है और इसे पहली बार आईजीसीएआर, कलपक्कम में फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर' में स्ट्रोंटियम सल्फेट पेलेट के विकिरण से प्राप्त किया गया।

विवाह प्रस्ताव ठुकराने पर छात्रा की हत्या करने के आरोप में दो लोग गिरफ्तार

बेंगलूरु। कर्नाटक में 20 वर्षीय कॉलेज छात्रा की हत्या के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि मुख्य आरोपी विग्नेश (28) छात्रा का पड़ोसी था और उसने विवाह प्रस्ताव ठुकराए जाने पर गुस्से एवं हताशा में उसकी कथित तौर पर हत्या कर दी। छात्रा यामिनी प्रिया की यहां रेलवे पटरी के पास गला रेतकर हत्या कर दी गई थी। यह घटना 16 अक्टूबर को अपराह्न करीब ढाई बजे हुई, जब फार्मेसी प्रथम वर्ष की छात्रा और स्वतंत्र पाल्या निवासी यामिनी प्रिया कॉलेज से घर लौट रही थी। विग्नेश कथित तौर पर उसके पास आया और उसने विवाह का प्रस्ताव रखा लेकिन जब प्रिया ने प्रस्ताव ठुकरा दिया तो उसने उस पर धारदार हथियार से कथित तौर पर हमला कर दिया जिससे उसकी मौत हो गई। पीड़िता के पिता की शिकायत के आधार पर श्रीरामपुरा पुलिस थाने में हत्या का मामला दर्ज किया गया। शिकायत के अनुसार, आरोपी पीड़िता के घर के सामने रहता था और उसके परिवार को जानता था तथा वह उस पर शादी के लिए दबाव डाल रहा था।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने जांच के बाद विग्नेश और उसे कथित तौर पर शरण देने वाले एक अन्य व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया तथा अपराध में इस्तेमाल किया गया दोपहिया वाहन भी जब्त कर लिया। अधिकारी ने बताया कि जांच जारी है।

मोहपाश में फंसाकर परेशान किए जाने के बाद युवक ने आत्महत्या की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मंगलूरु। मंगलूरु में एक अस्पताल में कार्यरत 26 वर्षीय एक युवक ने कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। युवक ने लसुसाइड नोट' में चार लोगों पर उसका एक वीडियो बनाकर उसे ब्लैकमेल और प्रताड़ित करने का आरोप लगाया। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि मृतक की पहचान निट्टे के परपडी निवासी अभिषेक के रूप में हुई है।

पुलिस के मुताबिक, युवक ने सुसाइड नोट में निरीक्षा, राहुल, राकेश व तस्लीम नाम के चार लोगों

पर आरोप लगाया कि उन्होंने पैसों के लिए उसे मानसिक व शारीरिक रूप से कथित तौर पर प्रताड़ित किया और यहां तक कि उसे जान से मारने की धमकी भी दी। पुलिस ने बताया कि 'सुसाइड नोट' की सामग्री के आधार पर जांच जारी है। पुलिस के मुताबिक, प्रारंभिक जांच से पता चला कि युवक लगातार मिल रही धमकियों और जबरन वसूली के प्रयासों से परेशान था। अधिकारियों ने बताया कि कानूनी कार्रवाई सुसाइड नोट' में उल्लिखित आरोपों के सत्यापन पर निर्भर करेगी।

दक्षिण पश्चिम रेलवे
ओपन सूचना सं. 30/MYS/2025, दिनांक: 13.10.2025
भारत के राष्ट्रपति की ओर से अधोहस्ताक्षरी निम्नलिखित अनुसूची के अनुसार ई-नीलामी / ई-निविदा हेतु निविदादाताओं को आमंत्रित करते हैं:

क्र.सं.	विवरण संक्षेप में	अनुमानित लागत
1	मैसूरु (एमवायएस), श्रीरंगपट्टना (एस), कडूर (डीआरयू), शिवमोग्गा टाऊन (एसएमईटी), दावणगेरे (डीवीजी), हावेरी (एचवीआर) और चिक्कजाजूर जं. (जेआरयू) (7 स्टेशनों) पर अतिरिक्त जल स्तंभों का प्रावधान। (जनरल कोचों का यात्रियों उपयोग के लिए कनिष्ठ 1 प्रति प्लॉटफार्म का अंत पर). उप कार्य-1: वरिष्ठ विभागीय इंजीनियर/उत्तर क्षेत्राधिकार: दावणगेरे (डीवीजी), हावेरी (एचवीआर) और चिक्कजाजूर जं. (जेआरयू) पर (3 स्टेशनों) पर अतिरिक्त जल स्तंभों का प्रावधान। उप कार्य-2: वरिष्ठ विभागीय इंजीनियर/पश्चिम क्षेत्राधिकार: मैसूरु और श्रीरंगपट्टणा (2 स्टेशनों) पर अतिरिक्त जल स्तंभों का प्रावधान। उप कार्य-3: विभागीय इंजीनियर/केंद्रीय क्षेत्राधिकार: शिवमोग्गा टाऊन (एसएमईटी) और कडूर (डीआरयू) स्टेशनों पर अतिरिक्त जल स्तंभों का प्रावधान।	रु. 66,77,344/-
2	सहायक विभागीय इंजीनियर/चित्रदुर्ग विभाग: किमी. 239/250-260 पर आरयूबी नं. 104बी और किमी. 240/300-400 पर एलसी सं. 146 पर ट्रैक के समानांतर पर सडक का निर्माण।	रु. 2,28,50,467/-
3	बीरूर - चिकजाजूर - करजगी विभाग: मैन लाईन और लूप लाईनों पर टीडब्ल्यूएस का रिन्यूअल कार्य - 161 सेट (12 में 1 - 118 सेट और 8.5 में 1 - 43 सेट)	रु. 1,41,06,189/-

निविदाओं जमा करने की अंतिम तिथि: 06.11.2025, 11:00 बजे तक
विवरण के लिए लॉग ऑन करें www.ireps.gov.in में
वरिष्ठ विभागीय इंजीनियर / समन्वय / मैसूरु
PUB/561/AAMO/PRB/SWR/2025-26
अनारक्षित टिकटों की बुकिंग में आसानी के लिए गूगल प्ले स्टोर से यूटीएस मोबाइल ऐप डाउनलोड करें
South Western Railway - SWR | SWRRLY | SWRAILWAYHQ | sw_railways

किसान भारत की आत्मा, इनकी समृद्धि से ही देश-प्रदेश होगा विकसित : भजनलाल शर्मा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भरतपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि किसान हमारे राष्ट्र निर्माता और भारत की आत्मा हैं। कृषक जब अपने खेतों में दिन-रात मेहनत करता है, तभी हमारी थाली में भोजन आ पाता है। उन्होंने कहा कि अन्नदाता शब्द समाज में किसान के सम्मान, गरिमा और महत्व को दर्शाता है। हमारा किसान समृद्ध होगा तो देश और प्रदेश भी विकसित होगा, इसलिए राज्य की डबल इंजन सरकार किसानों की समृद्धि के लिए दिन-रात कार्य कर रही है।

शर्मा ने शनिवार को भरतपुर के नदबई में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में राज्य के लगभग 72 लाख किसानों को मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की चौथी किस्त के रूप में लगभग 718 करोड़ रुपये की राशि का हस्तान्तरण किया। उन्होंने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किसानों को सर्वोपरि मानते हुए उनके कल्याण के लिए किसान सम्मान निधि योजना प्रारम्भ की। राजस्थान में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत पौने दो साल में किसानों को 7 हजार 31 करोड़ रुपये से अधिक दिए जा चुके हैं। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत 6 हजार के अतिरिक्त 3 हजार की राशि अलग से प्रदेश के किसानों को देती है। इसके तहत अब तक 70 लाख से अधिक किसानों को 1 हजार 355 करोड़ रुपये की धनराशि हस्तांतरित की गई है। इस प्रकार केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा किसान सम्मान निधि के तहत किसानों को कुल 8,386 करोड़ रुपये से अधिक की राशि दी जा चुकी है जो एक रिकॉर्ड है। इसी क्रम में चौथी किस्त के रूप में लगभग 718 करोड़ रुपये किसानों को और दिए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा शुरू की गई पीएम धन धान्य कृषि योजना प्रधानमंत्री की दूरदर्शी सोच की परिचायक है। देशभर से चयनित 100 जिलों में राज्य के आठ जिलों बाड़मेर, जैसलमेर, नागौर, जोधपुर, बीकानेर, पाली, जालोर और चूरू को भी इस योजना में शामिल किया गया है। इस योजना का उद्देश्य केवल उत्पादकता बढ़ाना ही नहीं, बल्कि फसल विविधीकरण, सिंचाई सुविधाओं में सुधार, भंडारण क्षमता में वृद्धि और किसानों को आसान ऋण उपलब्ध कराना भी है।

शर्मा ने किसानों को परम्परागत खेती के साथ ही, आधुनिक खेती भी अपनाने का आह्वान करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत बीते दो वर्षों के दौरान राज्य में साढ़े सात करोड़ से अधिक फसल बीमा पॉलिसी जारी की गई है। उन्होंने कहा कि 3 हजार 452 करोड़ रुपये का राज्यांश प्रीमियम जमा कराया गया तथा 5 हजार 965 करोड़ रुपये के बीमा क्लेम वितरित किए गए। पारदर्शिता के लिए इस योजना को पूरी तरह डिजिटल बनाया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य है कि कोई भी किसान इस सुविधा से वंचित न रहे। इसके लिए लगभग 78 लाख किसानों की भूमि का सत्यापन किया जा चुका है और लगभग 75 लाख किसानों की आधार सीडिंग तथा 71 लाख किसानों का ई-केवाईसी कार्य पूरा हो चुका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने 77 लाख से अधिक हजार किसानों को 43 हजार करोड़ रुपये से अधिक राशि के अल्पकालीन ब्याज मुक्त ऋण दिए हैं। साथ ही, गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना में करीब 71 हजार पशुपालकों को 515 करोड़ रुपये का ऋण तथा चालू वित्त वर्ष में 2 हजार 855 सदस्यों को दीर्घकालीन सहकारी कृषि और नॉन-फार्मिंग सेक्टर्स पर 5 प्रतिशत ब्याज अनुदान के साथ 103 करोड़ रुपये का ऋण दिया गया है।

शर्मा ने कहा कि पीएम कुसुम योजना के कंपोनेंट-बी के तहत राजस्थान में लगभग 50 हजार से अधिक सौर पंप सेट की स्थापना पर 733 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है। राज्य में 1 लाख 66 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में ड्रिप और मिनी फव्वारा सेट स्थापित कर 1 लाख किसानों को 740 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है। उन्होंने कहा कि 2 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में फव्वारा सेट स्थापित कर 1 लाख 13 हजार किसानों को 227 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है। प्याज के उचित भंडारण के लिए लगभग 2 हजार 583 प्याज भंडार गृहों की स्थापना हेतु 44 करोड़ रुपये तथा 97 हजार कृषि यंत्रों पर 546 करोड़ रुपये के अनुदान के साथ ही, 9 हजार 205 पीएम किसान समृद्धि केंद्र स्थापित किए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार वर्ष 2027 तक प्रदेश के किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध करवाने के लक्ष्य के साथ कार्य कर रही है। वर्तमान में 22 जिलों के किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध करवाई जा रही है। उन्होंने कहा कि कृषक समय-समय पर अपने खेत की मिट्टी की जांच करवाएं और आवश्यकतानुसार ही सीमित मात्रा में रासायनिक खाद का उपयोग करें। मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के तहत 400 करोड़ रुपये व्यय कर गाय, भैंस, भेड़-बकरी एवं ऊंट सहित 42 लाख पशुओं का निशुल्क बीमा किया गया है। दूध पर 5 रुपये प्रति लीटर का अनुदान दिया जा रहा है। पैक्स कंप्यूटराइजेशन योजना के अंतर्गत 5 हजार 626 पैक्स को गो लाइव किया गया है।

शर्मा ने कहा कि सरकार बनने के साथ ही, हमने राम जल सेतु लिंक परियोजना पर काम शुरू किया तथा यमुना जल के आवंटन के लिए एमओयू किया है, जिससे शेखावटी अंचल में चुरू, झुंझुनूं और सीकर की पेयजल जरूरत पूरी हो सकेगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर प्रदेश में शहरी सेवा शिविर और ग्रामीण सेवा शिविर का आयोजन किया गया और इन शिविरों में आमजन के कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने देशवासियों को त्योहारों के शुभ अवसर पर जीएसटी दरों में कमी की एक अनूठी सौगात दी है। इसका लाभ गरीब, किसान, मध्यम वर्ग, व्यापारी और उद्योग जगत सहित समाज के सभी वर्गों को मिल रहा है, जिससे त्योहार के अवसर पर प्रदेशवासियों की खुशियां दोगुनी हो गई हैं। सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के किसानों की समृद्धि के लिए पीएम किसान सम्मान निधि योजना की शुरूआत की। उन्होंने वर्ष 2014 के बाद किसानों की आर्थिक तरक्की के लिए भी विभिन्न फसलों की एमएसपी में वृद्धि की है। दक ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश के किसानों को मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की सौगात दी। पशुपालकों के लिए गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना शुरू की तथा किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध करवाई जा रही है।

उपमुख्यमंत्री के खिलाफ फर्जी खबरें छापने व वसूली रैकेट का भंडाफोड़, दो आरोपी हिरासत में

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान पुलिस ने राज्य की उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी के खिलाफ कई फर्जी और मानहानिकारक खबरें प्रकाशित करने तथा उन्हें (खबरें) हटाने के लिए पांच करोड़ रुपये मांगने के आरोप में मध्य प्रदेश से दो लोगों को हिरासत में लिया है। पुलिस ने यह जानकारी दी। दर्ज शिकायत के अनुसार, आरोपी आनंद पांडे और हरीश दिवेकर ने पिछले महीने समाचार पोर्टल 'द सूत्र' पर कुमारी के खिलाफ कथित तौर पर एक दर्जन से अधिक निराधार और मनगढ़ंत खबरे प्रकाशित की थीं। यह शिकायत 28 सितंबर को दर्ज कराई गई थी। शिकायतकर्ता ने कहा कि आरोपियों ने बाद में उपमुख्यमंत्री के परिचितों से संपर्क किया और ये झूठी खबरें हटाने और भविष्य में ऐसी खबरें प्रकाशित नहीं करने के लिए कई करोड़ रुपये की मांग की।

जयपुर पुलिस की ओर से शुक्रवार देर रात जारी एक बयान में कहा गया कि आरोपियों ने कथित तौर पर पैसे नहीं मिलने पर उपमुख्यमंत्री की राजनीतिक और सामाजिक छवि खराब करने की धमकी दी। पुलिस ने कहा कि यही भ्रामक सामग्री एक अन्य संबद्ध वेब पोर्टल 'द कैपिटल' पर भी प्रकाशित की गई थी। पुलिस की ओर से जारी विज्ञप्ति में कहा गया कि तकनीकी जांच और गवाहों के बयानों से पुष्टि हुई है कि ये खबरें तथ्य-आधारित नहीं थीं। जांच के दौरान पता चला कि आरोपियों ने फर्जी खबरें हटाने के लिए पांच करोड़ रुपये की मांग की थी और मांग पूरी नहीं होने पर उपमुख्यमंत्री के खिलाफ डिस्ट्रॉय दीया अभियान चलाने की धमकी दी थी।

विज्ञप्ति में कहा गया कि जांच अधिकारी ने साक्ष्यों के आधार पर शुक्रवार को मध्य प्रदेश के भोपाल से पांडे और दिवेकर को हिरासत में लिया और पूछताछ के लिए जयपुर ले आए। पुलिस ने कहा कि आपराधिक साजिश में शामिल अन्य लोगों की पहचान के लिए जांच जारी है।

राजस्थान में 122 करोड़ रुपये का फसल बीमा घोटाला उजागर : कृषि मंत्री मीणा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने शुक्रवार को दावा किया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) के तहत लगभग 122 करोड़ रुपये का एक बड़ा फसल बीमा घोटाला उजागर हुआ है। इसके अनुसार यह पाया गया कि फसल क्षति के बावजूद 1.7 लाख से अधिक किसानों के दावे शून्य दिखाए गए थे।

मीणा ने आज गंगानगर में संवाददाताओं से बातचीत में यह दावा किया। उन्होंने कहा,'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत खरीफ 2023, रबी 2023, खरीफ 2024 और रबी 2024 के दौरान करीब 1.70 लाख किसानों द्वारा व्यक्तिगत दावा आवेदन किए गए थे। मौसमी कहर से फसल के खराब होने के बावजूद बीमा कंपनी ने सभी किसानों की दावा राशि 'शून्य' कर दिया।' मंत्री के अनुसार जब उन्होंने इन कंपनियों की जांच करवाई तो किसानों और कृषि विभाग के कर्मियों के हस्ताक्षर फर्जी पाए गए। यानी बीमा कंपनी ने वास्तविक सर्वे किया ही नहीं। इन सभी किसानों का कुल 'दावा' करीब 100 करोड़ रुपये बनता था, जो पोर्टल में ऑनलाइन किए थे जो कंपनी द्वारा फर्जी हस्ताक्षर कर हड़प लिया गया। मीणा के अनुसार इसी तरह खरीफ 2023 के करीब 1,800 किसानों ने ऑफलाइन आवेदन किए थे, जिनका 'दावा' लगभग 22 करोड़ रुपये का है। इनमें भी वही गड़बड़ी पाई गई।

मीणा ने कहा कि विभाग ने अब तक 32,000 दावा प्रपत्रों फार्म की जांच की है, जिनमें से 30,000 से अधिक जाली पाए गए हैं। उन्होंने कहा, यह किसानों के साथ धोखाधड़ी और आधिकारिक अभिलेखों में हेराफेरी का एक गंभीर मामला है। व्यक्तिगत फसल बीमा दावों की सत्यापन समिति में एक किसान प्रतिनिधि और एक कृषि विभाग के अधिकारी शामिल थे। दोनों के हस्ताक्षर जाली पाए गए।

मंत्री ने कहा कि सभी प्रभावित किसानों को विभाग की मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के अनुसार मुआवजा दिया जाएगा और बीमा कंपनी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिकी दर्ज की जाएगी।

शर्मा ने मेहंदीपुर बालाजी के किए दर्शन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने धनतेरस के पावन पर्व पर शनिवार को दौसा जिले के मेहंदीपुर में पूर्ण विधि विधान से मेहंदीपुर बालाजी महाराज के पावन दर्शन-पूजन कर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि व आरोग्यमय जीवन के लिए कामना की। मेहंदीपुर बालाजी के महंत डॉ. नरेश पुरी महाराज ने मुख्यमंत्री शर्मा को मंत्रोच्चार के साथ विशेष पूजा-अर्चना कराई।

इस दौरान मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को पंच पर्व दीपोत्सव की शुभकामनाएं देते हुए स्वदेशी उत्पादों का अधिक से अधिक उपयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्वदेश में निर्मित उत्पादों का उपयोग करने से स्थानीय कामगारों, दुकानदारों और उद्यमियों को प्रोत्साहन मिलेगा और वोकल फॉर लोकल के तहत आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हम मजबूती से आगे बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने जीएसटी की दरों में कमी कर आमजन को बड़ा फायदा दिया है।

रोटी, कपड़ा और मकान सस्ता होने से आमजन के लिए यह दीपावली खुशियों की सौगात लेकर आई है। इस अवसर पर विधायक रामबिलास, विक्रम बंशीवाल, भागचंद टांकड़ा सहित जनप्रनिधिगण एवं उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

जयपुर में 43 लाख के नकली नोट बरामद

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजधानी जयपुर में त्योहारों की रौनक के बीच पुलिस को एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। धनतेरस की शाम नारायण विहार थाना क्षेत्र में एसओजी (स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप) ने छापा मारकर छ43 लाख के नकली नोट बरामद किए हैं। इस दौरान पुलिस ने दो युवकों को मौके से गिरफ्तार किया, जो लंबे समय से फर्जी करेंसी के इस नेटवर्क से जुड़े बताए जा रहे हैं। एसओजी की यह कार्रवाई पिछले 15 दिनों की निगरानी और गुप्त सूचनाओं के आधार पर की गई थी। टीम ने जिस फ्लैट पर दबिश दी, वहां से मिले नकली नोट इतने बारीक और खतरनाक स्तर पर तैयार किए गए थे कि उनमें वाटर मार्क और सिक्योरिटी फीचर तक मौजूद पाए गए यानी, सामान्य व्यक्ति के लिए असली और नकली में फर्क कर पाना लगभग नामुमकिन था। एडीजी एसओजी वी.के. सिंह ने बताया कि हर साल त्योहारों के मौसम में नकली नोटों का चलन बढ़ जाता है। बाजार में कैश ट्रांजैक्शन अधिक होने का फायदा उठाकर ऐसे गिरोह सक्रिय हो जाते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए एसओजी की कई टीमें राजस्थान के विभिन्न जिलों में अलर्ट थीं। सूचना मिलने पर एसओजी ने जयपुर पुलिस के साथ मिलकर नारायण विहार इलाके में स्थित एक फ्लैट पर छापा मारा। वहां से 43 लाख के नकली नोट जब्त किए गए, जो सभी छ500 के मूल्य वर्ग के थे। फिलहाल गिरफ्तार दोनों आरोपियों से पूछताछ जारी है और जांच साउथ जिला पुलिस को सौंप दी गई है।

बरामद नकली नोटों में से 26 लाख रुपए की पूरी गड्डियां मिलीं, जबकि 18 लाख रुपए के नोट अब तक शीट के रूप में थे, जिनकी कटिंग नहीं की गई थी। प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि ये शीट संभवतः किसी बाहरी राज्य से जयपुर लाई गई थीं, ताकि शहर के भीतर अलग-अलग जगहों पर सप्लाई की जा सके। यह पहलू पुलिस के लिए बेहद चौंकाने वाला है कि नकली नोटों में पहली बार टच-एंड-फील सिक्योरिटी फीचर और उभरा हुआ वाटर मार्क पाया गया है यानी ये नोट केवल रंगीन प्रिंट नहीं, बल्कि तकनीकी रूप से अत्यधिक उन्नत नकली करेंसी हैं।

पूछताछ में चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है। आरोपी छ1 लाख असली नोट के बदले 4 लाख नकली नोट दे रहे थे। इस डीलिंग के लिए मध्यस्थ के तौर पर बीकानेर का एक बदमाश काम कर रहा था, जो अब पुलिस की गिरफ्त से बाहर है। एसओजी के अनुसार, गिरोह का नेटवर्क कई शहरों तक फैला हुआ है। गिरफ्तार आरोपियों से मिली जानकारी के आधार पर राजस्थान और उससे सटे राज्यों में कई ठिकानों पर रेड की जा रही है। हालांकि पुलिस ने अभी दोनों आरोपियों के नाम सार्वजनिक नहीं किए हैं, लेकिन प्रारंभिक रिपोर्ट में यह सामने आया है कि दोनों की उम्र 25 से 35 वर्ष के बीच है और दोनों ही लंबे समय से छोटे स्तर पर नकली नोटों का लेन-देन करते रहे हैं। एक आरोपी कंप्यूटर ग्राफिक डिजाइनिंग का जानकार बताया जा रहा है, जिसने नकली करेंसी की प्रिंटिंग में तकनीकी भूमिका निभाई, जबकि दूसरा सप्लाई और नेटवर्किंग का काम देखता था। जांच में सामने आया है कि नोटों की प्रिंटिंग के लिए हाई-रेज़ोल्यूशन इंकजेट प्रिंटर और विशेष प्रकार का पेपर इस्तेमाल किया गया था।

गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की हुई जाँच

जयपुर/दक्षिण भारत। प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के अंतर्गत जिले में शनिवार को गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की जांच की गई। जिसमें उच्च जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं को चिन्हित कर उनका ईलाज करने के साथ पोषण युक्त आहार की जानकारी प्रदान की गई। इसके साथ ही मां वाउचर योजना के तहत गर्भवती महिलाओं को सोनोग्राफी के लिए वाउचर प्रदान किए गए। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी,जयपुर द्वितीय डॉ. मनीष मित्तल ने बताया कि शनिवार को जिले के चिकित्सा संस्थानों पर मनाए गए प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत विशेषज्ञ चिकिसकों द्वारा गर्भवती महिलाओं की जाँच की गई और मां वाउचर योजना के तहत सोनोग्राफी कराने के लिए माँ वाउचर प्रदान किए गए। अभियान में गर्भवती महिलाओं के रक्तचाप, शर्करा के स्तर, वजन, लंबाई, हीमोग्लोबिन, रक्त, एचआईवी जांच, हृदय स्पंदन आदि की जांच कर उनको गर्भ में पल रहे शिशु और स्वयं की देखभाल के विषय मे बताया गया और आई.एफ.ए. कैल्शियम तथा अन्य आवश्यक दवाएं उपलब्ध कराई गई।

अग्निशमन अधिकारी ढाई लाख रुपए रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार

बारां। एसीबी मुख्यालय के निर्देश पर एसीबी कोटा इकाई ने शनिवार को बड़ी कार्रवाई की। इसमें नगर परिषद बारां के आयुक्त मोती शंकर नागर और सहायक अग्निशमन अधिकारी उवेश शेख को दो लाख पचास हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया।एसीबी ने बताया कि यह कार्रवाई भ्रष्टाचार के खिलाफ सतत निगरानी और तत्परता के तहत की गई। दोनों अधिकारियों के खिलाफ आगे की कानूनी कार्रवाई और चोटिल रिपोर्ट तैयार की जा रही है। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो श्रीमती स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एसीबी कोटा को (9 अक्टूबर 2025) एक शिकायत इस आशय की मिली कि परिवादी को व्यापार करने में परेशान नही करने की एवज मे आरोपियो द्वारा 5 लाख रुपए रिश्वत मांग कर परेशान किया जा रहा है। शिकायत पर 15 व 17 अक्टूबर को रिश्वत मांग का सत्यापन कराया गया।

सत्यापन के पश्चात भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो कोटा, उप महानिरीक्षक पुलिस आनन्द शर्मा के सुपरविजन तथा भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो कोटा के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विजय स्वर्णकार के नेतृत्व में आज दिनांक 18.10.25 को ताराचंद उप अधीक्षक पुलिस एसीबी इण्टे. कोटा के नेतृत्व मे ट्रेप का आयोजन किया गया। परिवादी से उवेश शेख ने अपने कार्यालय मे दो लाख पचास हजार रुपये रिश्वत प्राप्त की तथा कार्यालय परिसर में खडी अपनी स्कूटी की डिक्की मे रिश्वत राशि रख कर रवाना होते हुए उसे ट्रेप दल द्वारा रंगे हाथो गिरफ्तार किया गया तथा सरकारी निवास से मोती शंकर नागर आयुक्त को डिटेन किया गया। आनन्द शर्मा उप महानिरीक्षक पुलिस के सुपरविजन में आरोपीगण से पूछताछ व कार्यवाही जारी है।

किसान साथी बदलते भारत के साथ चलें : विश्नोई

जयपुर। उद्योग एवं वाणिज्य राज्यमंत्री के. के. विश्नोई ने आज मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि कार्यक्रम के दौरान अपने संबोधन में किसानों से जागरूक बनने और बदलते भारत के साथ कदम मिलाने की अपील की। उन्होंने कहा कि किसानों को केंद्र और राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का सक्रिय रूप से लाभ उठाना चाहिए। राज्यमंत्री विश्नोई ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि आज भारत विश्व पटल पर अपनी एक अलग पहचान रखता है। उन्होंने बताया आज भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, और जल्द ही हम तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर हैं। हमें बदलते भारत के साथ चलना है। उन्होंने किसानों से वैश्विक प्रगति के इस दौर में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का आह्वान किया। यह बात उन्होने शनिवार को बालोतरा पंचायत समिति सभागार में आयोजित मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि कार्यक्रम के दौरान कही। इस दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नदबई से राज्य स्तरीय कार्यक्रम में अन्नदाताओं को मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत चौथी किस्त जारी कर धनतेरस, दीपावली एवं आगामी त्योहारों की बधाई प्रेषित की। उद्योग एवं वाणिज्य राज्यमंत्री के. के. विश्नोई ने राजस्थान की भजनलाल सरकार के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राज्य सरकार किसानों को संबल प्रदान करने एवं उन्हें सुदृढ़ बनाने का काम कर रही है। उन्होंने किसानों को याद दिलाया कि उनके हित के लिए राज्य और केंद्र सरकार कई जन कल्याणकारी योजनाएं चला रही हैं।

गांव की माटी से निकलेंगी विश्वस्तरीय प्रतिभाएं, सरकार देगी सपनों को पंख : बेढ़म

डीग। गृह, गोपालन, पशुपालन डेयरी तथा मत्स्य विभाग राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने कहा कि खेल अनुशासन, समर्पण और टीम भावना का प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है और राज्य सरकार की यह जिम्मेदारी है कि वह इन प्रतिभाओं को खोजकर, तराशकर उन्हें आगे बढ़ने के लिए एक सुदृढ़ मंच प्रदान करे, ताकि वे अपने गांव, प्रदेश और देश का नाम रोशन कर सकें। बेढ़म शनिवार को ग्राम घाटा धमारी में आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता के समापन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। गृह राज्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि खेल शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक मजबूती के लिए भी आवश्यक हैं।

सेना के जवान ने ट्रेन में नवजात को सीपीआर देकर बचाई जान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोलकाता/भाषा। छुट्टी से ड्यूटी पर लौट रहे भारतीय सेना के एक एम्बुलेंस सहायक ने ट्रेन में आठ महीने के शिशु को सीपीआर (कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन) देकर उसकी जान बचाई। एक रक्षा अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। सीपीआर एक आपातकालीन चिकित्सा प्रक्रिया होती है जिसका उपयोग हृदय गति या सांस रुकने पर किया जाता है।

अधिकारी ने बताया कि पूर्वोत्तर में सेना के एक फील्ड अस्पताल में तैनात सिपाही सुनील ने नई दिल्ली-डिब्रूगढ़ राजधानी एक्सप्रेस में यात्रा के दौरान शिशु को सीपीआर दिया और उसे स्थिर किया।

रक्षा अधिकारी ने एक बयान में कहा, उनकी समय पर और पेशेवर कार्रवाई ने ऐसी स्थिति में शिशु की जान बचाई जब तत्काल कोई चिकित्सा सहायता उपलब्ध नहीं थी। उन्होंने बताया कि ट्रेन में इस सप्ताह की शुरुआत में यात्रा कर रहे आठ महीने के शिशु को सांस लेने में अचानक तकलीफ होने लगी और उसके शरीर के अंगों ने काम करना बंद कर दिया।

रक्षा अधिकारी ने बताया कि बच्चे की मां यह सोचकर बेहोश हो गई कि उसकी मौत हो गई है तथा परिवार के अन्य सदस्य घबरा गए। उन्होंने बताया कि '456 फील्ड अस्पताल' में तैनात सिपाही (एम्बुलेंस सहायक) सुनील छुट्टी से लौट रहे थे और उसी डिब्बे में थे।

अधिकारी ने बताया कि वह उनकी सहायता के लिए तुरंत दौड़े और शिशु की जांच करने पर पाया कि उसकी न तो नब्ज मिल रही थी और न ही सांस चल रही थी। उन्होंने बताया कि सुनील ने शिशु को तुरंत सीपीआर देने की प्रक्रिया शुरू की जिसके बाद उसके शरीर के अंगों ने प्रतिक्रिया देना शुरू कर दिया।

रक्षा अधिकारी ने बताया कि इसके बाद सुनील ने शिशु के चिकित्सकीय प्रबंधन के लिए ट्रेन कर्मचारियों और रेलवे पुलिस के साथ समन्वय सुनिश्चित किया। उन्होंने कहा कि सिपाही की सूझ-बूझ ने शिशु की जान बचा ली।

भारत अब ब्रह्मोस से न केवल अपनी, बल्कि मित्र देशों की सुरक्षा में भी सक्षम हुआ : योगी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ/भाषा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को कहा कि भारत अब 'ब्रह्मोस' मिसाइल से न केवल अपनी सुरक्षा, बल्कि मित्र देशों की सुरक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है।

योगी आदित्यनाथ लखनऊ स्थित 'ब्रह्मोस एयरोस्पेस' इकाई में निर्मित 'ब्रह्मोस' मिसाइलों की पहली खेप के अनावरण समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा, भारत अब 'ब्रह्मोस' जैसी मिसाइल से न केवल अपनी सुरक्षा बल्कि, दुनिया के अंदर अपने मित्र देशों की सुरक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी सक्षम है। उन्होंने कहा कि भारत की रक्षा आवश्यकताओं में आत्मनिर्भरता की यह मिसाइल एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लखनऊ में डिफेंस कॉरिडोर स्थापित करने का उल्लेख करते हुए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि रक्षा मंत्री के सानिध्य में विकसित ब्रह्मोस मिसाइल केंद्र न केवल रक्षा जरूरतों को पूरा करेगा, बल्कि यह क्षेत्र की खुशहाली का भी माध्यम बनेगा। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि लखनऊ में निर्मित ब्रह्मोस मिसाइल पूरे देश के लोगों की समृद्धि और सुरक्षा का प्रतीक है।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि लखनऊ में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'मेक इन इंडिया' संकल्प को साकार करने का यह क्षण अत्यंत प्रफुल्लित करने वाला है। उन्होंने कहा कि यह मिसाइल न केवल भारत की सुरक्षा सुनिश्चित करती है, बल्कि विश्व में अपने मित्र देशों की रक्षा करने का सबसे सक्षम हथियार भी है। योगी ने 2018 के पहले निवेशक सम्मेलन का उल्लेख करते हुए कहा कि लखनऊ में ही प्रधानमंत्री ने दो रक्षा उत्पादन कॉरिडोर की घोषणा की थी, जिनमें से एक उत्तर प्रदेश को प्राप्त हुआ।

व्यापारियों ने धनतेरस पर बिक्री में उछाल आने की संभावना जताई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

रांची/भाषा। झारखंड के व्यापारियों ने कहा कि शनिवार को धनतेरस के अवसर पर राज्यभर के बाजारों में माल एवं सेवा कर (जीएसटी) दरों में हालिया कटौती के बीच अच्छी बिक्री होने की संभावना है। उन्होंने बताया कि ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स और घरेलू उपकरणों के विक्रेता त्योहारी सीजन के दौरान उपभोक्ताओं के सकारात्मक रुख को लेकर बड़ी उम्मीद पाले हुए हैं जबकि आसमान छूती सोने की कीमतों के कारण जौहरी बिक्री को लेकर संशय में हैं।

फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (एफजेसीसीआई) के अध्यक्ष आदित्य मल्होत्रा ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, इस साल धनतेरस पर बाजार को जीएसटी में हालिया कटौती के कारण मजबूती मिली है खासकर ऑटोमोबाइल और घरेलू उपकरणों के क्षेत्र में। कुल मिलाकर, हम कह सकते हैं कि बाजारों में एक सकारात्मक माहौल बना हुआ है। उन्होंने कहा कि धनतेरस और दिवाली त्योहारों के आगमन के साथ लोग खरीदारी करने के मूड में दिख रहे हैं जबकि दुर्गा पूजा के दौरान लगातार बारिश के कारण बिक्री प्रभावित हुई थी। धनतेरस वह त्योहार है जो दिवाली समारोहों की शुरुआत का प्रतीक है। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने धनतेरस के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री ने पोस्ट किया, धनतेरस का यह पावन त्योहार हमारे जीवन में अच्छे स्वास्थ्य, समृद्धि और एक उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक है। इस पवित्र अवसर पर हर घर खुशियों, बेहतर स्वास्थ्य और समृद्धि के प्रकाश से भर जाए। मैं कामना करता हूं कि आप सभी फले-फूलें और समृद्ध बनें।

ट्रंप ने फिर किया रूसी तेल के संबंध में दावा, प्रधानमंत्री मौन : कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने शनिवार को कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत के रूस से कच्चा तेल नहीं खरीदने संबंधी दावा फिर से किया है लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मौन धारण किए हुए हैं।

पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने ट्रंप के ताजा बयान का हवाला दिया जिसमें उन्होंने कहा है कि भारत अब रूस से कच्चा तेल नहीं खरीदेगा। ट्रंप ने कुछ दिनों पहले भी यह दावा किया था कि उनके ''मित्र'' प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें व्यक्तिगत रूप से आश्वासन दिया है कि भारत अब रूस से कच्चा तेल नहीं खरीदेगा। रमेश ने शनिवार को 'एक्स' पर पोस्ट किया, राष्ट्रपति ट्रंप ने एक बार फिर कहा है कि उनके अच्छे मित्र ने उन्हें आश्वासन दिया है कि भारत रूस से तेल के आयात में कटौती करेगा। लेकिन वह अच्छे मित्र उस वक्त अचानक मौनी बाबा बन जाते हैं जब राष्ट्रपति ट्रंप कहते हैं कि उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर रुकवा दिया है और अब जब वह कहते हैं कि भारत रूस से तेल का आयात कम कर देगा। उन्होंने कहा, इस बीच अप्रैल-सितंबर 2025 के दौरान चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा पिछले साल की समान अवधि के 49.6 अरब डॉलर की तुलना में बढ़कर 54.4 अरब डॉलर हो गया। रूस से कच्चे तेल के आयात को लेकर ट्रंप के पिछले दावे के बाद भारत सरकार ने कहा था कि वह बाजार की परिस्थितियों के अनुरूप ऊर्जा स्रोत के आधार को व्यापक और विविध बना रहा है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने ट्रंप के दावे पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि अस्थिर ऊर्जा परिदृश्य में भारतीय उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करना सरकार की निरंतर प्राथमिकता रही है।

पश्चिम बंगाल में अवैध प्रवासियों का 'रेड कार्पेट बिछाकर' स्वागत हो रहा : अमित शाह

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पटना/भाषा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शासित राज्य असम में घुसपैठ रुक गई है, लेकिन पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल में यह जारी है और वहां की सरकार अवैध प्रवासियों का ''रेड कार्पेट बिछाकर स्वागत'' कर रही है।

पटना में समाचार चैनल 'एबीपी न्यूज' और समाचार पत्र 'हिंदुस्तान' द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित समागम को संबोधित करते हुए उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर तंज कसा और कहा कि उन्होंने अब ''वोट चोरी'' के मुद्दे को छोड़ दिया है। केंद्रीय गृह मंत्री ने यह भी दोहराया कि मतदाता सूची की विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया ''घुसपैठियों को चिह्नित कर हटाने'' में सहायक होगी। शाह ने कहा, यह अचंभे की बात है कि विपक्ष निर्वाचन आयोग द्वारा शुरू की गई उस प्रक्रिया पर आपत्ति जता रहा है, जिसका उद्देश्य घुसपैठियों को बाहर करना है। मैं एसआईआर प्रक्रिया का पूरी तरह समर्थन करता हूं। यह आखिर में पूरे देश में लागू की जाएगी। हालांकि, जब उनसे विपक्ष के इस आरोप पर सवाल किया गया कि यदि देश में घुसपैठ हो रही है तो इसकी जिम्मेदारी केंद्र में 11 साल से सत्ता में रही नरेन्द्र मोदी सरकार की है, तो शाह ने तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, लुटियंस दिल्ली में बैठे लोगों को सीमाओं की हकीकत का अंदाजा नहीं है। बांग्लादेश सीमा पर घने जंगल हैं, विशाल नदियां हैं जो बरसात में उफान पर रहती हैं। वहां बाड़ लगाना और 24 घंटे निगरानी रखना लगभग असंभव है।

अरुणाचल का शहरी परिवर्तन केंद्र और राज्य की योजनाओं से प्रेरित : खांडू

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

ईटानगर/भाषा। अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने शनिवार को शहरी विकास में राज्य की महत्वपूर्ण प्रगति पर प्रकाश डाला, तथा समावेशी और टिकाऊ पहलों के माध्यम से प्रत्येक नागरिक के लिए सम्मान, आराम और बेहतर जीवन स्तर सुनिश्चित करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। सोशल मीडिया पर एक 'इन्फोग्राफिक' साझा करते हुए खांडू ने कहा कि राज्य का शहरी परिवर्तन प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी), उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन 2.0 और जल जीवन मिशन सहित प्रमुख केंद्रीय और राज्य योजनाओं के संयोजन से प्रेरित है।

खांडू ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, किफायती आवास से लेकर स्वच्छ खाना पकाने, सुरक्षित पेयजल से लेकर वैज्ञानिक अपशिष्ट प्रबंधन तक, हमारी शहरी विकास यात्रा प्रत्येक नागरिक के लिए सम्मान, आराम और बेहतर जीवन स्तर सुनिश्चित कर रही है। 'पेमा 3.0 – सुधार और विकास का वर्ष: शहरी विकास' शीर्षक वाले इन्फोग्राफिक में कई प्रमुख कार्यक्रमों के तहत प्रमुख उपलब्धियों को प्रस्तुत किया गया है। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत, राज्य ने 6,459 लाभार्थियों को कवर किया है, जिससे शहरी क्षेत्रों में किफायती आवास उपलब्ध हो रहे हैं। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना और उज्ज्वला 2.0 के तहत 49,000 से ज्यादा एलपीजी कनेक्शन वितरित किए गए हैं, जिससे खाना पकाने की प्रदूषण रहित प्रक्रिया में योगदान मिला है और घरेलू स्वास्थ्य में सुधार हुआ है।

बिहार में मतदान के दिन मतदाता सवैतनिक अवकाश के हकदार: निर्वाचन आयोग

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। निर्वाचन आयोग ने शनिवार को कहा कि बिहार में अगले महीने होने वाले विधानसभा चुनाव में मतदाता मतदान के दिन सवैतनिक अवकाश के हकदार हैं और इस कानूनी प्रावधान का उल्लंघन करने वाले नियोक्ताओं पर जुर्माना लगाया जा सकता है।

आयोग ने यह भी कहा है कि जिन राज्यों के आठ विधानसभा क्षेत्रों में 11 नवंबर को उपचुनाव होना है, वहां के मतदाता भी सवैतनिक अवकाश के हकदार हैं। आयोग ने कानूनी प्रावधानों का हवाला देते हुए कहा, जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 135बी के अनुसार, किसी भी व्यवसाय, व्यापार, औद्योगिक उपक्रम या किसी अन्य प्रतिष्ठान में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति, और लोकसभा या किसी राज्य/केंद्र शासित प्रदेश की विधानसभा के चुनाव में मतदान करने का हकदार है, उसे मतदान के दिन सवैतनिक अवकाश दिया जाएगा। आयोग ने कहा कि इस तरह के अवकाश के कारण वेतन में कोई कटौती नहीं की जाएगी। आयोग ने कहा, इन प्रावधानों का उल्लंघन करने वाले नियोक्ता पर जुर्माना लगाया जाएगा। आयोग ने कहा कि सभी दैनिक वेतनभोगी और अस्थायी कर्मचारी भी चुनाव के दिन सवैतनिक अवकाश के हकदार हैं।

'नया मुखौटा पहने जंगल राज' पर भरोसा न करें: शाह की बिहार के लोगों से अपील

पटना/भाषा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि बिहार की जनता को नए मुखौटा पहने जंगलराज पर भरोसा नहीं करना चाहिए और उम्मीद जताई कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) बिहार में सत्ता बरकरार रखेगा। शाह ने पटना में 'एबीपी न्यूज' और 'हिंदुस्तान समूह' द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'बिहार समागम' सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नीत 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस' (इंडिया) दरअसल ''जंगलराज का नया रूप'' है, जबकि राजग ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार को स्थिरता और प्रगति की राह पर आगे बढ़ाया है।

उन्होंने कहा, मैं बिहार की जनता का आशीर्वाद लेने आया हूं। पिछले 20 वर्षों में हमने इस राज्य को नरक से बाहर निकाला है। अब समय है कि इस मजबूत नींव पर एक मजबूत संरचना तैयार की जाए। मैं जनता से अपील करता हूं कि वे जंगलराज लाने वालों पर भरोसा न करें, चाहे वे किसी नए चेहरे या गठबंधन के रूप में क्यों न आएं।

चिराग ने सीट बंटवारे पर भाजपा-जद(यू) का आभार जताया, कहा-राजग को ऐतिहासिक जीत मिलेगी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पटना/भाषा। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने शनिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और जनता दल (यूनाइटेड) का आभार व्यक्त किया और कहा कि दोनों दलों ने बिहार विधानसभा चुनाव के लिए सीट बंटवारे में छोटे सहयोगी दलों को सम्मानजनक हिस्सेदारी देकर ''बड़ा दिल'' दिखाया है। उन्होंने दावा किया कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में ऐतिहासिक जीत दर्ज करेगा।

पासवान ने यहां अमित शाह से मुलाकात की जो पटना में चुनावी समीक्षा और संगठनात्मक बैठकों में हिस्सा ले रहे हैं। चिराग ने कहा, हम किसी विशेष संख्या की सीट के लिए नहीं लड़ रहे थे। हमारी सिर्फ यह मांग थी कि हमें उन सीटों पर उतारा जाए, जहां हमारी उपस्थिति मजबूत है। भाजपा और जद(यू) दोनों ने बहुत उदारता दिखाई है, इसके लिए मैं आभारी हूं। हाजीपुर से सांसद पासवान की पार्टी लोजपा (रामविलास) को सीट बंटवारे में 29 सीट मिली हैं, जबकि वर्तमान विधानसभा में उनकी पार्टी के पास एक भी विधायक नहीं था। सीट बंटवारे के अनुसार, भाजपा और जद(यू) को 101-101 सीट, राष्ट्रवादी लोक मोर्चा (उपेंद्र कुशवाहा) को छह सीट और हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर) के नेता व केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी की पार्टी को भी छह सीट दी गई हैं। पासवान ने विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस' (इंडिया) पर तंज कसते हुए कहा, विपक्षी दलों में इतनी आपसी खींचतान है कि यह स्पष्ट ही नहीं है कि उनका चेहरा कौन है-तेजस्वी यादव या कोई और। राजद (राष्ट्रीय जनता दल), कांग्रेस और वाम दलों के उम्मीदवार आपस में ही भिड़ रहे हैं। उन्होंने दावा, राजग प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में ऐतिहासिक जीत दर्ज करेगा।

त्रिपुरा में अभियान तेज करने के बाद भारी मात्रा में नशीले पदार्थ जब्त : माणिक साहा

अगरतला/भाषा। त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने शनिवार को कहा कि सुरक्षा बलों द्वारा अभियान तेज करने के बाद पिछले 10 दिनों में पूर्वोत्तर राज्य में भारी मात्रा में नशीले पदार्थ जब्त किए गए हैं। मुख्यमंत्री का यह बयान पश्चिम त्रिपुरा जिले के जिरानिया रेलवे स्टेशन पर एक मालगाड़ी से प्रतिबंधित कफ सिरप की 90 हजार बोतलें जब्त किए जाने के एक दिन बाद आया। साहा ने एक पोस्ट में कहा, पिछले 10 दिनों में पुलिस और खुफिया एजेंसियों द्वारा नशीली पदार्थों के खिलाफ अभियान तेज किए जाने के चलते 896 किलोग्राम गांजा, प्रतिबंधित कफ सिरप की 90,817 बोतलें, याबा की 180 टैबलेट और 27.78 ग्राम हेरोइन बरामद की गई हैं। उन्होंने कहा, इस अवधि के दौरान एनडीपीएस (स्वापक औषधि एवं मन:प्रभावी पदार्थ) अधिनियम के तहत कुल 16 लोगों को गिरफ्तार किया गया है और 15 मामले दर्ज किए गए हैं। साहा ने कहा, त्रिपुरा पुलिस नशा मुक्ति को लेकर दृढ़ संकल्पित है तथा नशीले पदार्थों की तस्करी और व्यापार में शामिल सभी सरगनाओं को सजा दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है।

मोबाइल टावर जलाने और पुलिया उड़ाने के मामले में वांछित दो माओवादी झारखंड में गिरफ्तार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चाईबासा/भाषा। झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले में दो माओवादियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अल्ब्रेट लोमगा उर्फ रेंगा लोमगा (19) और विकास लोमगा उर्फ रापा लोमगा उर्फ बाल्का लोमगा (20) को शुक्रवार को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि दोनों ने जराइकेला थाना क्षेत्र में एक मोबाइल फोन टावर में आग लगा दी थी और छोटानागरा थाना क्षेत्र के राखामाटी में एक पुलिया को विस्फोट करके उड़ा दिया था।

पुलिस ने बताया कि उनके पास से बरामद सामान में 9 वोल्ट की 22 बैटरियां और 200 मीटर लंबा तार शामिल है। एक अन्य अभियान में, जिले के जेटिया थाना क्षेत्र के एक जंगल से भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया गया।

पुलिस ने बताया कि ये हथियार माओवादियों के थे और जंगल में छिपाकर रखे गए थे। पुलिस अधीक्षक अमित रेणु ने बताया कि एक इंसास राइफल, 5.56 एमएम बोर के 198 कारतूस, 7.62 एमएम बोर के 112 कारतूस, .303 बोर के 134 कारतूस, चार इंसास मैगजीन, 7.62 एमएम एसएलआर की दो मैगजीन और .303 राइफल की दो मैगजीन बरामद की गईं। यह अभियान सीआरपीएफ, कोबरा, झारखंड जगुआर और जिला सशस्त्र पुलिस द्वारा संयुक्त रूप से चलाया गया।

ओडिशा सरकार ने दिवाली पर दो दिन का अवकाश घोषित किया

भुवनेश्वर/भाषा। ओडिशा सरकार ने इस साल दिवाली पर दो दिन के अवकाश की घोषणा की है। शनिवार को जारी एक अधिसूचना में यह जानकारी दी गई। सरकार ने पहले 21 अक्टूबर को दिवाली की छुट्टी घोषित की थी, नई अधिसूचना में 20 अक्टूबर को भी दिवाली की छुट्टी घोषित की गई है। राजस्व मंत्री सुरेश पुजारी ने कहा, इस साल राज्य सरकार के कर्मचारियों को दिवाली पर दो दिन की छुट्टी मिलेगी। हालांकि, उन्हें 25 अक्टूबर को काम करना होगा जो चौथा शनिवार है। उन्होंने कहा कि नुआपाड़ा के कर्मचारियों को 20 अक्टूबर को छुट्टी नहीं मिलेगी क्योंकि 11 नवंबर को होने वाले उपचुनाव के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने की आखिरी तारीख यही है। पुजारी ने कहा कि पुरी जगन्नाथ मंदिर के 'मुक्ति मंडप पंडित महासभा' की सिफारिशों के आधार पर 20 अक्टूबर को अवकाश घोषित किया गया है।

रोहित और विराट से मेरे रिश्ते में कुछ नहीं बदला है : शुभमन गिल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पर्थ/भाषा। पिछले कुछ सप्ताह से सोशल मीडिया पर चाहे जो अटकलबाजी चल रही हो लेकिन भारत के नए वनडे कप्तान शुभमन गिल ने कहा है कि रोहित शर्मा और विराट कोहली से उनके रिश्ते पहले की तरह मजबूत हैं और मैच के दौरान परेशानी में होने पर वह इन दोनों दिग्गजों से सलाह लेने में हिचकिचायेंगे नहीं।

रोहित की जगह गिल को भारत का नया वनडे कप्तान बनाया गया है। उसके बाद से रोहित और कोहली के भविष्य को लेकर अटकलें लगाई जा रही है। गिल की कप्तानी में भारतीय टीम रविवार से आस्ट्रेलिा के खिलाफ तीन मैचों की वनडे श्रृंखला खेलेगी। स्वान नदी के किनारे प्रेस कांफ्रेंस में गिल ने कहा, बाहर भले ही कुछ भी बातें चल रही हो लेकिन रोहित से मेरे रिश्ते नहीं बदले हैं। जब भी मुझे मदद की जरूरत होती है, वह हमेशा उपलब्ध होते हैं। चाहे वह पिच के बारे में पता करना हो या कुछ भी। उन्होंने कहा, मैं उनसे जाकर

पूछता हूं कि आपको क्या लगता है। अगर आप कप्तान होते तो क्या करते। विराट भाई और रोहित भाई से मेरे बहुत अच्छे संबंध हैं और वे सलाह देने से हिचकिचाते नहीं हैं। 26 वर्ष के गिल को पता है कि इन दोनों धुरंधरों की जगह लेना मुश्किल है और उन्हें दोनों पूर्व कप्तानों से काफी सहयोग की जरूरत होगी। उन्होंने कहा, मैने विराट भाई और रोहित भाई से टीम को आगे ले जाने के बारे में काफी बात की है। वह किस तरह से टीम को आगे ले जाना चाहते थे और इस अनुभव और सबक से हमें काफी मदद मिलेगी। गिल ने कहा, माही भाई (एम एस धोनी), विराट भाई और रोहित भाई ने जो विरासत बनाई है, इतने सारे अनुभव और सीख है। उनका अनुभव और कौशल टीम के लिए बहुत बड़ा है। उन्होंने कहा, जब मैं छोटा था तो ये मेरे आदर्श थे और जिस तरह से वे खेलते थे और जो रनों की भूख थी, मैं उससे काफी प्रेरित होता था। ऐसी टीम की कप्तानी करना मेरे लिए गर्व की बात है जिसमे से महान खिलाड़ी हैं। गिल ने कहा, जब भी मैं परेशानी में रहूंगा तो उनसे सलाह लेने में पीछे नहीं हटूंगा। मैने उनकी कप्तानी में खेलते हुए काफी कुछ सीखा है। मैं उसी तरह का कप्तान बनना चाहता हूं जिसमे मेरे सारे खिलाड़ी सुरक्षित महसूस करें और संवाद स्पष्ट हो। उन्होंने कहा, इन दोनों ने करीब 20 साल तक भारतीय क्रिकेट की सेवा की है और मैने उनसे बहुत कुछ सीखा है।

टीम का मनोबल ऊंचा है, एक सप्ताह का ब्रेक हमारे लिए अच्छा रहा : दीप्ति शर्मा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

इंदौर/भाषा। सीनियर आलराउंडर दीप्ति शर्मा ने कहा कि लगातार हार के बावजूद भारतीय टीम का मनोबल पहले की तरह ऊंचा है और एक सप्ताह के ब्रेक से टीम को रविवार को यहां इंग्लैंड के खिलाफ होने वाले महिला विश्व कप के अहम मुकाबले से पहले एकजुट होने और ध्यान केंद्रित करने का मौका मिला है।

पिछले सप्ताह दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया से लगातार हार के कारण भारत को करारा झटका लगा है और अब उसे सेमीफाइनल में जगह बनाने की दौड़ में बने रहने के लिए अपने शेष तीन लीग मैचों में से दो में जीत हासिल करनी होगी। दीप्ति ने इंग्लैंड के खिलाफ मैच की पूर्व संध्या पर संवाददाताओं से कहा, हम दो मैच हार गए हैं, लेकिन इससे हमारे मनोबल पर कोई असर नहीं पड़ा है क्योंकि हमने टूर्नामेंट की शुरुआत में दो अच्छे मैच खेले थे। हम हमेशा सकारात्मक सोच के साथ उतरते हैं और एक टीम के रूप में हमने जो अच्छा किया है उस पर अधिक ध्यान केंद्रित करते है। भारत का पांच गेंदबाजों के साथ उतरने की रणनीति अभी तक कारगर साबित नहीं हुई है। दीप्ति से जब इंग्लैंड के खिलाफ मैच के लिए टीम के संयोजन बारे में पूछा गया, उन्होंने कहा, मैं इस बारे में आपको कुछ नहीं बता सकती। यह टीम प्रबंधन का फैसला है। उन्होंने कहा, अलग-अलग मैचों में अलग-अलग गेंदबाज़ों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। सभी ने अपनी भूमिका निभाई है। हमने कल के मैच के लिए अच्छी योजना बनाई है।

पिछली बार जब दोनों टीमें आमने-सामने हुई थीं, तो भारत ने इंग्लैंड में 2-1 से एकदिवसीय श्रृंखला में यादगार जीत हासिल की थी और दीप्ति ने कहा कि इस परिणाम से टीम प्रेरणा लेने की कोशिश करेगी। उन्होंने कहा, इंग्लैंड के खिलाफ पिछली विदेशी सीरीज़ से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला और हमने वहां जीत हासिल की। यह उस दिन अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने से जुड़ा है। टीम का दृष्टिकोण सकारात्मक है और एक सप्ताह के विश्राम के बाद अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए तैयार है।

सुविचार

भविष्य का डॉक्टर कोई दवा नहीं देगा, लेकिन अपने रोगियों को मानव शरीर की देखभाल, आहार में और बीमारी के कारण और रोकथाम में रुचि देगा।

ट्वीट

आज कोटा स्थित कार्यालय पर बड़ी संख्या में संसदीय क्षेत्र के परिजन मिलने पहुंचे और दीपावली की शुभकामनाएँ दीं। सभी को इस पावन पर्व की हार्दिक बधाई देते हुए उनके जीवन में सुख, समृद्धि और मंगलकामनाओं की कामना की।

-ओम बिरला

2014 के बाद हमारी सरकार ने भटके हुए नौजवानों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया। 11 वर्ष पहले तक देश के 125 से ज्यादा जिले माओवादी आतंक से प्रभावित थे। लेकिन, आज ये संख्या केवल 11 जिलों तक सिमट गई है।

-अर्जुनराम मेघवाल

कहानी

वह अविस्मरणीय रात

महेन्द्र तिवारी
मोबाइल : 9989703240

जीजाजी शुरू से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। बचपन से ही उनमें एक विलक्षण प्रतिभा थी जो काम हाथ में लेते, उसको पूरी लगन और समझदारी से करते थे। पढ़ाई में अव्वल रहने वाले जीजा जी का सपना था कि वे किसी अच्छे सरकारी नौकरी में काम करेंगे। क्योंकि जीजा जी एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखते थे। जब उनकी शादी तय हुई, तब तक वह कई सरकारी परीक्षाएँ दे चुके थे। कुछ के परिणाम आ चुके थे और कुछ के आने बाकी थे, लेकिन अब तक कहीं से उन्हें नियुक्ति पत्र नहीं मिला था। फिर भी, सभी को पूरा भरोसा था कि ऐसा तेजस्वी लड़का ज़रूर कहीं न कहीं सेट हो जाएगा। इसी विश्वास पर उनकी शादी तय हुई और धूमधाम से संपन्न भी हुई।

शादी के कुछ ही महीने बाद उनको नियुक्ति पत्र भी आ गया। वे एचईसी में इंजीनियर नियुक्त हो गए। दीदी के साथ वे रांची में रहने लगे। जीजा जी अपने काम में इतने निपुण थे कि दफ्तर में सब उनकी मिसाल देते थे। उनकी स्मरणशक्ति विलक्षण थी। एक बार किसी फाइल या दस्तावेज़ पर नज़र डाल दी, तो बस वह उनके दिमाग में ऐसे बैठ जाता जैसे किसी कंप्यूटर की हार्ड डिस्क में स्थायी रूप से सेव हो गया हो।

ऑफिस में जब भी कोई किसी तकनीकी उलझन में पड़ता, तो जीजा जी से सलाह ज़रूर लेता। वे बिना किताब खोले, बिना नोट्स देखे, ऐसे उत्तर देते मानो जवाब उनके सामने लिखा हो। धीरे-धीरे सबका विश्वास इस हद तक बढ़ गया कि लोग उनके उत्तर को अंतिम सत्य मानने लगे। जब भी कोई उन्हें आज़माने की कोशिश करता, हर बार जीजाजी सही साबित होते।

दोनों का जीवन बहुत खुशहाल था। दीदी घर संभालतीं, जीजाजी काम में डूबे रहते। उनका एकमात्र दोष यह था कि काम करते हुए उन्हें समय का ध्यान ही नहीं रहता था। अकसर ऑफिस में देर तक रुकते, कभी कोई प्रोजेक्ट अधूरा न रह जाए, इस चिंता में कई-कई घंटे काम करते। परिणाम यह होता कि घर लौटते-लौटते रात के नौ-दस बज जाते। दीदी उन्हें समझातीं, लेकिन जब यह आदत बढ़ने लगी, तो कई बार डांट भी पड़ती। जीजाजी ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो बहस करें या पलटकर कुछ कहें। जब भी दीदी गुस्से में कुछ कहतीं, वे बस मुस्कराकर चुपचाप सुन लेते। पर धीरे-धीरे एक नई समस्या जन्म लेने लगी। तनाव और थकान से बचने के लिए उन्होंने सिगरेट और शराब का सहारा लेना शुरू कर दिया। पहले तो कभी-कभार ही होता था, फिर यह एक आदत में तब्दील हो गया। दीदी को यह बिल्कुल पसंद नहीं था। जब भी उन्हें इसका पता चलता, घर में भूचाल आ जाता।

इसी बीच, मुन्ना दीदी का भतीजा पढ़ाई के लिए रांची आ गया। उसे मेडिकल की तैयारी करना था। अब घर में एक नई रौनक आ गई थी। जीजाजी को मुन्ना का साथ बहुत भाने लगा था। वह पढ़ाई में भी अच्छा था और घर के छोटे-मोटे कामों में भी मदद कर देता था। दोनों में एक दोस्ताना रिश्ता सा बन गया।

एक दिन जीजाजी ने मुन्ना से कहा, देखो, बेटा, अगर कभी मैं पीकर घर आऊँ, तो तुम चुपके से दरवाज़ा खोल देना। तुम्हारी बुआ को पता नहीं चलनी चाहिए।

मुन्ना ने हँसते हुए हामी भर दी। एक तरह का गुप्त समझौता स्थापित हो गया था दोनों के बीच में। जीजाजी देर रात लौटते। हमेशा ही हल्के नशे में होते और मुन्ना दरवाज़ा खोल दिया करता। सब कुछ शांति से निपट जाता। लेकिन एक रात ऐसा हुआ कि किस्मत ने इस गोपनीय योजना का भंडाफोड़ हो गया।

उस रात जीजाजी की ऑफिस की पार्टी थी। कुछ ज़्यादा ही पी लिए थे। जब लौटने का समय हुआ तो लड़खड़ाने लगे थे। उनका ड्राइवर किसी तरह उन्हें कंधे पर उठाकर घर तक लाया। उस दिन मुन्ना को नींद लग गई थी। वह गहरी नींद में सो रहा था। ड्राइवर ने दरवाज़ा खटखटाया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। अब दीदी को नींद से जगना ही था।

दरवाज़ा खुलते ही उन्होंने देखा। उनके इंजीनियर साहब, जो कभी इतनी सलीके से दफ्तर जाते थे, आज ड्राइवर के कंधे पर लटके हुए हैं। दीदी का पारा चढ़ गया। बिना कुछ सोचे-समझे, उन्होंने पास में रखी झाड़ू उठा ली और ताबड़तोड़ मारने लगीं। लेकिन झाड़ू की मार जीजाजी पर नहीं पहुँच रहे थे क्योंकि ड्राइवर उन्हें बचाने में लगा हुआ था। झाड़ू की हर चोट उस पर पड़ रही थी, और वह चिल्लाता दीदी, मुझे मत मारो!

उधर मुन्ना नींद भी तब तक नींद से जग गया था। यह दृश्य देखकर वह हँसी से लोटपोट हुए जा रहा था। उसकी हँसी रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। ड्राइवर किसी तरह जीजाजी को खाट पर लिटाकर भाग खड़ा हुआ। दीदी अब भी झाड़ू हाथ में लिए उसे घर रही थीं।

इस बीच, शराब का असर अब उतर रहा था। जीजाजी ने चारों ओर देखा और समझ गए कि अब बचना मुश्किल है। वे धीरे से खाट के नीचे घुस गए और बोले, मुन्ना, तुम चुप ही रहना, नहीं तो तुम्हारी बुआ मुझे पकड़ लेंगी।

मुन्ना फिर से हँसी से दोहरा हुए जा रहा था। कुछ ही देर में दीदी लौटीं, गुस्से से भरी हुईं। जब उन्होंने देखा कि जीजाजी खाट के नीचे बच्चों की तरह दुबक कर बैठे हैं, तो उनका गुस्सा ठंडा पड़ गया। उनके चेहरे पर मुस्कान तैर गई।

उन्होंने जोर से कहा, निकलो बाहर, इतना बड़ा आदमी खाट के नीचे छिपता है क्या?

जीजाजी धीरे-धीरे बाहर निकले, सिर झुकाए। जीजी ने झाड़ू एक ओर रख दी, पानी लाकर दिया और फिर प्यार से खाना परोसकर लाईं। वह रात हँसी और शिकवे के बीच बीत गई।

समय बीतता गया। जीजाजी अब बूढ़े हो चुके हैं। रिटायरमेंट को कई साल हो गए हैं। शरीर अब साथ नहीं देता। डायबिटीज़ ने जकड लिया है उन्हें। कुछ वर्ष पहले ही एक हार्ट अटैक आ चुका है उन्हें। दीदी आज भी उनका पूरी शिद्दत के साथ ख्याल रखती हैं। जीजाजी को समय पर खानपान और दवा का नियमित प्रबंध रखती हैं वह।

जीवन की अपनी यात्रा में जीजाजी ने बहुत कुछ पाया – मान, प्रतिष्ठा, परिवार और अनुभव। पर अगर कोई उनसे पूछे कि उनकी सबसे प्यारी याद कौन-सी है, तो वे हँसते हुए कहते हैं, वह अविस्मरणीय रात... जब मैं खाट के नीचे छिपा था और तुम्हारी दीदी मुझे ढूँढ़ रही थीं।

संजय उवाच

संजय भारद्वाज
9890122603
writersanjay@gmail.com

तमसो मा ज्योतिर्गमय

दीपावली, भारतीय लोकजीवन का सबसे बड़ा त्योहार है। कार्तिक मास की अमावस्या को सम्पन्न होने वाले इस पर्व में घर-घर दीप जलाये जाते हैं। अपने घर में प्रकाश करना मनुष्य की सहज और स्वाभाविक वृत्ति है किंतु घर के साथ परिसर को आलोकित करना उदात्तता है। शतपथ ब्राह्मण का उद्घोष है,

असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय...!

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' से भौतिक संसार में प्रकाश का विस्तार भी अभिप्रेत है। हर दीप अपने स्तर पर प्रकाश देता है पर असंख्य दीपक सामूहिक रूप से जब साथ आते हैं तो अमावस्या दीपावली हो जाती है।

इन पंक्तियों के लेखक की दीपावली पर एक चर्चित कविता है, जिसे विनम्रता से साझा कर रहा हूँ,

अँधेरा मुझे डराता रहा,
हर अँधेरे के विरुद्ध
एक दीप मैं जलाता रहा,
उजास की मेरी मुहिम
शनैः-शनैः रंग लाई,
अनगिन दीयों से
रात झिलमिलाई,
सिर पर पैर रख
अँधेरा पलायन कर गया
और इस अमावस
मैंने दीपावली मनाई !

कथनी और करनी दो भिन्न शब्द हैं। इन दोनों का अर्थ जिसने जीवन में अभिन्न कर लिया, वह मानव से देवता हो गया। सामूहिक प्रयासों की बात करना सरल है पर वैदिक संस्कृति यथार्थ में व्यष्टि के साथ समष्टि को भी दीपों से प्रभासित करने का उदाहरण प्रस्तुत करती है। सामूहिकता का ऐसा क्रियावान उदाहरण दुनिया भर में मिलना कठिन है। यह संस्कृति 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' केवल कहती नहीं अपितु अंधकार को प्रकाश का दान देती भी है।

प्रभु श्रीराम द्वारा रावण का वध करके अयोध्या लौटने पर जनता ने राज्य में दीप प्रज्वलित कर दीपावली मनाई थी। श्रीराम सद्गुण का साकार स्वरूप हैं। रावण, तमोगुण का प्रतीक है। श्रीराम ने समाज के हर वर्ग को साथ लेकर रावण को समाप्त किया था। तम से ज्योति की यात्रा का एक बिंब यह भी है। स्वाभाविक है कि सामूहिक दीपोत्सव का रेकॉर्ड भी भारतीयों के नाम ही है। यह सामूहिकता, सामासिकता और एकात्मता का प्रमाणित वैश्विक दस्तावेज़ भी है।

तथापि सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि वर्तमान में चंचल धन और पार्थिव अधिकार के मद ने आँखों पर ऐसी पट्टी बांध दी है कि हम त्योहार या उत्सव की मूल परम्परा ही भुला बैठे हैं। आद्य चिकित्सक धन्वंतरी की त्रयोदशी को हमने धन की तेरस तक सीमित कर लिया। रूप की चतुर्दशी, स्वरूप को समर्पित कर दी। दीपावली, प्रभु श्रीराम के अयोध्या लौटने, मूल्यों की विजय एवं अर्चना का प्रतीक न होकर केवल द्रव्यपूजन का साधन हो गई।

उत्सव और त्योहारों को उनमें अंतर्निहित उदात्तता के साथ मनाने का पुनर्स्मरण हमें करना ही होगा। अपने जीवन के अंधकार के विरुद्ध एक दीप हमें प्रज्वलित करना ही होगा। जिस दिन एक भी दीपक इस सुविधानुसार विस्मरण के अंधेरे के आगे सीना ठोंक कर खड़ा हो गया, यकीन मानिए, अमावस्या को दीपावली होने में समय नहीं लगेगा।

नरक चतुर्दशी : यमराज के लिए दीपदान करने का पर्व

योगेश कुमार गोयल
मोबाइल : 9416740584.

कार्तिक कृष्ण पक्ष में पांच पर्वों का जो विराट महोत्सव मनाया जाता है, महापर्व की उस श्रृंखला में सबसे पहले पर्व धनतेरस के बाद दूसरा पर्व आता है 'नरक चतुर्दशी'। कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाए जाने वाले पर्व 'नरक चतुर्दशी' नाम में 'नरक' शब्द से ही आभास होता है कि इस पर्व का संबंध भी किसी न किसी रूप में मृत्यु अथवा यमराज से है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन यमराज का पूजन करने तथा व्रत रखने से नरक की प्राप्ति नहीं होती। दीवाली से ठीक एक दिन पहले मनाए जाने वाले इस पर्व की तिथि को लेकर लोगों के मन में भ्रम की स्थिति है कि यह पर्व 19 अक्तूबर को मनाया जाएगा या 20 अक्तूबर को। इस साल चतुर्दशी तिथि का आरंभ 19 अक्टूबर, रविवार को दोपहर 1 बजकर 51 मिनट पर हो रहा है और इसका समापन 20 अक्टूबर, सोमवार को दोपहर 3 बजकर 44 मिनट पर होगा। यूं तो उदया तिथि के अनुसार, छोटी दिवाली 20 तारीख को मनाई जानी चाहिए लेकिन यम चतुर्दशी की पूजा चूंकि प्रदोष काल यानी शाम के समय ही की जाती है, इसीलिए नरक चतुर्दशी यानी छोटी दीवाली 19 अक्तूबर को मनाई जाएगी। 20 अक्तूबर को सुबह 5 बजकर 13 मिनट से सुबह 6 बजकर 25 मिनट तक का शुभ समय अभ्यंग स्नान के लिए श्रेष्ठ है क्योंकि इस मुहूर्त में किया गया स्नान सौंदर्य को बढ़ता है और तेजमय शरीर की प्राप्ति होती है। छोटी दीवाली पर यम का दीपक जलाने का शुभ मुहूर्त 19 अक्टूबर की शाम को है। नरक चतुर्दशी के दिन यम का दीपक शाम 6 बजकर 58 मिनट से लेकर शाम 7 बजकर 28 मिनट तक के बीच में जला सकते हैं।

'नरक चतुर्दशी' पर्व को 'नरक चौदस', 'रूप चतुर्दशी', 'काल चतुर्दशी' तथा 'छोटी दीवाली' के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन मृत्यु के देवता यमराज और धर्मराज चित्रगुप्त का पूजन किया जाता है और यमराज से प्रार्थना की जाती है कि उनकी कृपा से हमें नरक के भय से मुक्ति मिले। इसी दिन रामभक्त हनुमान का भी जन्म हुआ था और इसी दिन वामन अवतार में भगवान विष्णु ने राजा बलि से तीन पग भूमि दान में मांगते हुए तीनों लोकों सहित बलि के शरीर को भी अपने तीन पगों में नाप लिया था। हनुमान जयंती वैसे तो चैत्र मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है, लेकिन उत्तर भारत के कई भागों में यह दीवाली से एक दिन पहले भी मनाई जाती है।

यम को मृत्यु का देवता और संयम के अधिष्ठाता देव माना गया है। नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले उठकर स्नान करना शुभ माना गया है और सायंकाल के समय यम के लिए दीपदान किया जाता है। आशय यही है कि संयम-नियम से रहने वालों को मृत्यु से जरा भी भयभीत नहीं होना चाहिए। इस दिन सूर्योदय से पहले स्नान करने का आशय ही आलस्य का त्याग करने से है और इसका सीधा संदेश यही है कि संयम और नियम से रहने से उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उनकी अपनी साधना ही उनकी रक्षा करेगी।

नरक चतुर्दशी मनाए जाने के संबंध में एक मान्यता है कि इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने प्रागज्योतिषपुर के राजा नरकासुर' नामक अधर्मी राक्षस का वध किया था और ऐसा करके उन्होंने न केवल पृथ्वीवासियों को बल्कि देवताओं को भी उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई थी। उसके आतंक से पृथ्वी के समस्त शूरवीर और सम्राट भी थर-थर कांपते थे। अपनी शक्ति के घमंड में चूर नरकासुर शक्ति का दुरूपयोग करते हुए स्त्रियों पर भी अत्याचार करता था। उसने 16000 मानव, देव एवं गंधर्व कन्याओं को बंदी बना रखा था। देवों और ऋषि-मुनियों के अनुरोध पर भगवान श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के सहयोग से नरकासुर का संहार किया था और उसके बंदीगृह से 16000 कन्याओं को मुक्ति दिलाई थी। नरकासुर से मुक्ति पाने की खुशी में देवगण व पृथ्वीवासी बहुत आनंदित हुए और उन्होंने यह पर्व मनाया गया। माना जाता है कि तभी से इस पर्व को मनाए जाने की परम्परा शुरू हुई।

धनतेरस, नरक चतुर्दशी तथा दीवाली के दिन दीपक जलाए जाने के संबंध में एक मान्यता यह भी है कि इन दिनों में वामन भगवान ने अपने तीन पगों में सम्पूर्ण पृथ्वी, पाताल लोक, ब्रह्माण्ड व महादानवीर दैत्यराज बलि के शरीर को नाप लिया था और इन तीन पगों की महत्ता के कारण ही लोग यम यातना से मुक्ति पाने के उद्देश्य से तीन दिनों तक दीपक जलाते हैं तथा सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु मां लक्ष्मी का पूजन करते हैं। यह भी कहा जाता है कि बलि की दानवीरता से प्रभावित होकर भगवान विष्णु ने बाद में पाताल लोक का शासन बलि को ही सौंपते हुए उसे आशीर्वाद दिया था कि उसकी याद में पृथ्वीवासी लगातार तीन दिन तक हर वर्ष उनके लिए दीपदान करेंगे। नरक चतुर्दशी का संबंध स्वच्छता से भी है। इस दिन लोग अपने घरों का कूड़ा-कचरा बाहर निकालते हैं। इसके अलावा यह भी मान्यता है कि इस दिन प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व तेल एवं उबटन लगाकर स्नान करने से पुण्य मिलता है।

बोध कथा

बाबापुर की रामलीला

तेनालीराम हमेशा अपनी बुद्धिमता से सबका मन जीतने के लिए जाने जाते थे। आए दिन राज्य पर आई किसी न किसी समस्या को सुलझाने के लिए वे अपना दिमाग लगाया करते थे। इसी तरह जब एक बार दशहरा पर नाटक मंडली विजयनगर नहीं पहुंच पाई, तो तेनाली ने क्या किया, आइए जानते हैं। काशी की एक नाटक मंडली हमेशा दशहरे से पहले विजयनगर आया करती थी। यह नाटक मंडली विजयनगर में रामलीला किया करती थी और नगर वासियों का मनोरंजन किया करती थी। यह एक तरह से विजयनगर की संस्कृति थी और ऐसा हर साल हुआ करता था, लेकिन एक साल ऐसा आया जब काशी नाटक मंडली के कई सदस्य बीमार पड़ गए और उन्होंने कह दिया कि वो विजयनगर नहीं आ पाएंगे। यह सुनकर महाराज कृष्णदेव राय और सारी प्रजा बहुत उदास हो गई।

दशहरे को अब सिर्फ कुछ ही दिन बाकी थे और ऐसे में किसी और नाटक मंडली को बुलाकर रामलीला का आयोजन करवाना बहुत मुश्किल था। दरबार के मंत्रियों और राजगुरु ने आसपास के गांव की नाटक मंडली को बुलाने की कोशिश की, लेकिन किसी का भी आ पाना बहुत मुश्किल था। सबको निराश देख तेनालीराम ने कहा, मैं एक नाटक मंडली को जानता हूं। मुझे यकीन है कि वो विजयनगर में रामलीला करने के लिए जरूर तैयार हो जाएंगे।

तेनाली की यह बात सुनकर सब खुश हो गए। इसके साथ ही राजा ने तेनाली को मंडली बुलाने की जिम्मेदारी सौंप दी और तेनाली ने भी रामलीला की तैयारी करना शुरू कर दी। विजयनगर को नवरात्र के लिए सजाया गया और रामलीला मैदान की साफ-सफाई करवा कर वहां बड़ा-सा मंच बनवाया गया। उसी के साथ मैदान पर बड़ा-सा मैला भी लगवाया गया।

जब नगर में रामलीला होने की खबर फैली, तो सारी जनता रामलीला देखने के लिए उत्सुक हो गई। रामलीला वाले दिन सभी लोग रामलीला देखने के लिए मैदान में इकट्ठे हो गए। वहीं, महाराज कृष्णदेव राय, सभी मंत्रीगण और सभा के अन्य सदस्य भी वहां मौजूद थे। सभी ने रामलीला का खूब मजा उठाया। जब नाटक खत्म हो गया, तो सभी ने उसकी बहुत तारीफ की। खासकर, नाटक मंडली में मौजूद बच्चों की कलाकारी सभी को बहुत पसंद आई थी। महाराज सभी से इतना खुश थे कि उन्होंने पूरी नाटक मंडली को महल में खाना खाने का न्योता दे दिया। जब पूरी मंडली महल आई, तो सभी ने महाराज, तेनाली और अन्य मंत्रीगण के साथ भोजन किया। इस दौरान महाराज ने तेनालीराम से पूछा कि उन्हें इतनी अच्छी मंडली कहां से मिली? इस पर तेनाली ने उत्तर दिया, ये मंडली बाबापुर से आई है, महाराज। बाबापुर? इस जगह का नाम तो हमने कभी नहीं सुना। कहां है ये?, महाराज ने आश्चर्य से पूछा। यहीं विजयनगर के पास ही है, महाराज।

तेनाली की यह बात सुनकर मंडली के सदस्य मुस्कुराने लगे। इस पर महाराज ने उनसे मुस्कुराने की वजह पूछी, तो मंडली का एक बच्चा बोला, महाराज, हम विजयनगर के ही रहने वाले हैं। इस मंडली को तेनाली बाबा ने तैयार करवाया है और इसलिए हमारा नाम बाबापुर की मंडली है। बच्चे की यह बात सुनकर महाराज सहित सभी लोग ठहाके लगाने लगे।

वीर गाथा

सिपाही प्रदीप सिंहः आखिरी सांस तक अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहे

सिपाही प्रदीप सिंह का जन्म 20 अप्रैल, 1996 को पंजाब के पटियाला जिले के बालमगढ़ गांव में हुआ था। माता परमजीत कौर और पिता दर्शन सिंह के बेटे प्रदीप जब 8वीं कक्षा में पढ़ रहे थे, तब उन्होंने फैसला किया था कि वे एक दिन सैनिक बनेंगे। उनका यह सपना दिसंबर 2015 में पूरा हुआ।

पहले, वे सिक्ख लाइट इन्फेंट्री में थे। बाद में, उन्हें 19 आरआर में भेज दिया गया था। उन्हें जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद प्रभावित इलाकों में तैनात किया गया था। वे साल 2023 में अनंतनाग जिले में तैनात थे।

13 सितंबर को, सुरक्षा बलों को अपने खुफिया सूत्रों से सूचना मिली कि कोकरनाग के गडूल गांव के पास घने जंगलों में कुछ आतंकवादी छिपे हुए हैं। सूचना का विश्लेषण करने के बाद आतंकवादियों के खिलाफ अभियान शुरू किया गया। प्रदीप सिंह को भी टीम में शामिल किया गया था।

योजना के अनुसार, टीम उस इलाके में पहुंची और तलाशी अभियान शुरू कर दिया। इससे आतंकवादी बुरी तरह घबरा गए थे। वे जान बचाकर भागने लगे थे। टीम ने इसका अनुमान पहले ही लगा लिया था, इसलिए उस रास्ते पर प्रदीप सिंह को तैनात कर दिया था।

उधर, आतंकवादी अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे, इधर प्रदीप सिंह उनसे डटकर मुकाबला कर रहे थे। इस दौरान प्रदीप को कई गोलियां लगीं और वे गंभीर रूप से घायल हो गए थे। जब उनके साथी जवान उन्हें संभालने आए, तब तक वे वीरगति को प्राप्त हो चुके थे। सिपाही प्रदीप सिंह एक बहादुर और अनुशासित सैनिक थे, जो आखिरी सांस तक अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहे। उन्हें 'शौर्य चक्र' से सम्मानित किया गया।

महत्त्वपूर्ण

Printed& Published by Devendra Sharma on behalf of owners M/s. New Media Company, 6/4 , Ist floor, Cantonment station road, Bengaluru-51 and printed at Dinasudar Printing Division, 116, Queens Road, Bengaluru-560052. **Editor-Shreekant Parashar**, (*Responsible for selection of news under PRB Act.) Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law. **RNI No. 58061/93. Regn No.: RNP/KA/BGS/2050/2015-2017 posted at Bengaluru PSO Mysore Road Bengaluru-560 026**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टैंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता। – दक्षिण भारत राष्ट्रमत

भीड़

दिवाली से पहले अपने घर पहुँचने के लिए लोग पटना जंक्शन रेलवे स्टेशन पर शनिवार को ट्रेन में सवार होते हुए।

किसी भी उकसावे का भारत को 'निर्णायक जवाब' दिया जाएगा : पाकिस्तानी सेना प्रमुख

इस्लामाबाद/भाषा। पाकिस्तानी सेना प्रमुख फील्ड मार्शल सैयद आसिम मुनीर ने शनिवार को तीखी बयानबाजी करते हुए भारत को मामूली उकसावे पर भी निर्णायक जवाब देने की चेतावनी दी और कहा कि परमाणु हथियारों वाली दुनिया में युद्ध के लिए कोई जगह नहीं है।

मुनीर खैबर पख्तूनख्वा के एबटाबाद स्थित प्रमुख पाकिस्तान सैन्य अकादमी (पीएमए) काकुल में सेना के कैडेटों के स्नातक समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, मैं भारत के सैन्य नेतृत्व को सलाह देता हूं और दृढ़ता से आगाह करता हूं कि परमाणु (हथियारों से) संपन्न माहौल में युद्ध की कोई गुंजाइश नहीं है।

सेना प्रमुख ने कहा, हम कभी भी भयभीत नहीं होंगे, बयानबाजी से प्रभावित नहीं होंगे और बिना किसी झिझक के मामूली उकसावे का भी निर्णायक जवाब देंगे।

भारत और पाकिस्तान के बीच हाल के सैन्य संघर्ष का उल्लेख करते हुए, मुनीर ने दावा किया कि उनके देश की सशस्त्र सेनाओं ने सभी खतरों को निष्प्रभावी करके उल्लेखनीय पेशेवर रुख और दूरगामी क्षमताओं का प्रदर्शन किया है और संख्यात्मक रूप से बेहतर प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ विजयी बनकर उभरी हैं। भारत ने सात मई को ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया, जिसके तहत 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए हमले के जवाब में पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी ढांचे को निशाना बनाया गया, जिसमें 26 नागरिक मारे गए थे।

भारत और पाकिस्तान के बीच चार दिनों तक सीमा पार से ड्रोन और मिसाइल हमलों के बाद संघर्ष को समाप्त करने के लिए 10 मई को सहमति बनी थी। यह सहमति दोनों सेनाओं के सैन्य संचालन महानिदेशकों (डीजीएमओ) के बीच सीधी बातचीत के बाद बनी थी। मुनीर ने भारत पर पाकिस्तान को अस्थिर करने के लिए आतंकवाद को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने का आरोप लगाया और कहा कि मुट्ठी भर आतंकवादी पाकिस्तान को नुकसान नहीं पहुंचा सकते। उन्होंने चेतावनी दी कि अफगान धरती का इस्तेमाल करने वाले सभी प्रॉक्सी (छद्म संगठनों) को धूल में मिला दिया जाएगा, उनका स्पष्ट संदर्भ तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) से था। सेना प्रमुख ने भारत से अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार मुख्य मुद्दों को सुलझाने का आग्रह किया, जो कश्मीर विवाद का स्पष्ट संदर्भ था। इसके साथ ही उन्होंने जम्मू-कश्मीर के लोगों को नैतिक और कूटनीतिक समर्थन प्रदान करने की पाकिस्तान की प्रतिबद्धता दोहराई। पाकिस्तान को एक शांतिप्रिय देश बताते हुए मुनीर ने कहा कि अमेरिका और चीन सहित प्रमुख शक्तियों के साथ उसके मजबूत संबंध हैं।

रूस में बुद्ध के पवित्र अवशेषों को देखने के लिए अब तक 90,000 से अधिक श्रद्धालु पहुंचे

नई दिल्ली/भाषा। रूस के कल्मिकिया स्थित एक मठ में लाये गए भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों को देखने के लिए अब तक 90,000 से अधिक श्रद्धालु पहुंचे हैं। ये अवशेष मूल रूप से नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय में रखे गए थे, जिन्हें भारतीय वायुसेना के एक विशेष विमान से रूस ले जाया गया और 11 अक्टूबर को इन्हें कल्मिकिया गणराज्य की राजधानी एलिस्टा पहुंचाया गया। प्रदर्शनी के एक हिस्से के रूप में, बाद में इसे अस्थायी रूप से एलिस्टा के मुख्य बौद्ध मठ में रखा गया, जिसे गेडेन शेडुप चोइकोरलिंग मठ के नाम से जाना जाता है। इसे ''शाक्यमुनि बुद्ध का स्वर्ण निवास'' भी कहा जाता है। संस्कृति मंत्रालय ने पहले बताया था कि यह एक महत्वपूर्ण तिब्बती बौद्ध केंद्र है, जिसे 1996 में आम लोगों के लिए खोला गया था और इसके चारों ओर कल्मिक मैदान है। मंत्रालय ने शनिवार को बताया कि जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा शुक्रवार को एलिस्टा पहुंचे और 19 अक्टूबर को पवित्र अवशेषों को भारत वापस लाने के लिए वह एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे। उन्होंने स्थानीय मीडिया के साथ बातचीत में कहा कि यह प्रदर्शनी भारत और रूस के लोगों के बीच संबंधों को और मजबूत करेगी। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि अब तक, 90,000 से अधिक श्रद्धालु प्रतिष्ठित गेडेन शेडुप चोइकोरलिंग मठ में रखे अवशेषों के दर्शन कर चुके हैं। बुद्ध के पवित्र अवशेषों को पहले 24 से 28 सितंबर तक कल्मिकिया में एक प्रदर्शनी में रखा जाना था। सूत्रों ने पूर्व में बताया था कि कुछ अप्रत्याशित कारणों और तकनीकी परिस्थितियों के कारण इसमें देरी हुई। कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय के बीटीआई (बौद्ध तिब्बती संस्कृति एवं कला) अनुभाग द्वारा अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी), राष्ट्रीय संग्रहालय और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) के सहयोग से किया गया है।

फिल्म 'मी नो पॉज मी प्ले' में काम्या पंजाबी निभा रही हैं लीड किरदार

मुंबई/एजेन्सी

टीवी इंडस्ट्री की जानी-मानी अभिनेत्री और लंबे समय से टेलीविजन पर अपनी दमदार एक्टिंग से दर्शकों का दिल जीतने वाली काम्या पंजाबी ने अभिनय की नई मिसाल पेश करते हुए 'मेनोपॉज' जैसे विषय पर बेस्ड एक ऐसी फिल्म 'मी नो पॉज मी प्ले' में काम किया है, जिस तरह के विषय को बड़े पर्दे पर शायद ही कभी दिखाया गया हो। इतना ही नहीं, मेनोपॉज पर भारत की यह पहली हिंदी फीचर फिल्म भी है।इसी वजह से भारतीय सिनेमा के लिए एक अभूतपूर्व कदम उठाते हुए 'मी नो पॉज मी प्ले' का पोस्टर भी 18 अक्टूबर 2025 को वर्ल्ड मेनोपॉज डे पर ही जारी किया गया। 'मी नो पॉज मी प्ले' महिला-केंद्रित कहानी कहने की दिशा में एक साहसिक कदम भी है। इस फिल्म के के जरिये निर्माता ने समाज से सदियों से मासिक धर्म को लेकर व्याप्त रूढ़िवादिता को तोड़ने, जागरूकता का प्रचार प्रसार करने के साथ महिलाओं की समझ और सहानुभूति को बढ़ावा देने की कामयाब कोशिश की है। बता दें कि मनोज कुमार शर्मा की प्रशंसित पुस्तक पर डिजिफिल्मिंग और मिरो फिल्म्स की इस फिल्म में काम्या पंजाबी के अलावा दीपशिखा नागपाल, सुधा चंद्रन, एमी मिसोब्बा भी दमदार मुख्य भूमिकाओं में हैं। ये सभी फिल्म में ऐसी महिलाओं का किरदार निभा रही हैं, जो ताकत, स्वीकृति और बदलाव की नई परिभाषा गढ़ती हैं। साथ ही रूढ़िवादिता में जकड़े समाज से मासिक धर्म के बारे में चुप्पी की नहीं, बल्कि बेहतर और सुलझे हुए समझ की मांग करती है। इसके साथ ही फिल्म में मनोज कुमार शर्मा, करण छाबड़ा और अमन वर्मा भी अहम किरदारों में नजर आएंगे।

फिल्म 'मी नो पॉज मी प्ले' सहानुभूति, जागरूकता और स्वीकृति के बारे में है और हर उस महिला के लिए है, जो इस बदलाव का सामना चुपचाप और साहस के साथ करती है। 28 नवंबर, 2025 को रिलीज होने जा रही मनोज कुमार शर्मा द्वारा लिखितनिर्मित और समर के. मुखर्जी द्वारा निर्देशित फिल्म 'मी नो पॉज मी प्ले' एक ऐसे विषय पर आधारित है, जिसे इससे पहले बड़े पर्दे पर कभी नहीं दिखाया गया है। मेनोपॉज यानी रजोनिवृत्ति, एक महिला के जीवन का एक अपरिहार्य, लेकिन अक्सर अनकहा अध्याय है और मेनोपॉज के विषय पर आधारित यह भारत की पहली हिंदी फिल्म है, जिसका उद्देश्य महिलाओं के स्वास्थ्य, भावनात्मक बदलावों और आत्म-स्वीकृति के इर्दगिर्द बातचीत को सामान्य बनाना है। फिल्म की पटकथा और संवाद शकील कुरैशी और मनोज कुमार शर्मा ने लिखे हैं, जबकि छायांकन अकरम खान ने किया है। दुर्भाग्य की बात है कि भारत जैसे विकासशील देश में मासिक धर्म आज भी एक वर्जित विषय ही बना हुआ है। यह अलग बात है कि कुछ समय से समाज में इसके बारे में भी चर्चाएं शुरू हुई हैं, लेकिन आज भी यह एक ऐसा विषय ही है, जो खामोशी और बेचैनी में लिपटा हुआ है, जबकि यह हर महिला के जीवन का एक अपरिहार्य और महत्वपूर्ण अवस्था है, जिससे उसके हार्मोन्स, मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और यहां तक कि पहचान भी प्रभावित होती है।

श्रिया पिलगांवकर और पैन नलिन छठे ऑल लिविंग थिंग्स एनवायरनमेंटल फिल्म फेस्टिवल की जूरी में शामिल

नयी दिल्ली/भाषा

अभिनेत्री श्रिया पिलगांवकर और प्रशंसित फिल्म निर्माता पैन नलिन 'ऑल लिविंग थिंग्स एनवायरनमेंटल फिल्म फेस्टिवल' (एएलटी ईएफएफ) के छठे संस्करण के निर्णायक मंडल में शामिल हैं। आयोजकों ने यह घोषणा की। देश के सबसे बड़े 'एनवायरनमेंटल फिल्म फेस्टिवल' के रूप में पहचाना जाने वाला यह फिल्म समारोह इस वर्ष चार से 14 दिसंबर, 2025 तक आयोजित किया जाएगा। यह 11 दिवसीय फिल्म महोत्सव मुंबई में आयोजित किया जाएगा तथा इसमें भारत और दुनिया भर से फीचर फिल्मों, वृत्तचित्रों, लघु फिल्मों और छात्र फिल्मों की एक विविध श्रृंखला प्रदर्शित की जाएगी, जो पर्यावरण,

सुस्थिरता, संरक्षण और जलवायु परिवर्तन जैसे विषयों पर केंद्रित होंगी। एएलटी ईएफएफ के संस्थापक और महोत्सव निदेशक कुणाल खन्ना ने कहा, फिल्मों में लोगों को प्रेरित करने और बदलाव लाने की शक्ति होती है। हमारे विकेंद्रीकृत मॉडल और नयी वॉच पार्टी पहल के साथ, हम इस मिशन को और आगे ले जा रहे हैं। फिल्मों में लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ने और बदलाव लाने की शक्ति होती है। अपने विकेन्द्रीकृत मॉडल और नई 'वॉच पार्टी' पहल के माध्यम से, हम इस मिशन को और आगे ले जा रहे हैं सीधे उन लोगों तक, जो अपने समुदायों में प्रभाव पैदा कर सकते हैं। ऑस्कर 2023 के लिए भारत की आधिकारिक प्रविष्टि द लास्ट फिल्म शो के निर्देशक पैन नलिन ने कहा, ऑल्ट ईएफएफ सिर्फ़ एक उत्सव नहीं है, यह एक ऐसा मंच है जो इस ग्रह के साथ हमारे जुड़ाव की भावना को फिर से जागृत करता है। मैं ऐसी कहानियों को देखने के लिए उत्साहित हूं जो हमें हमारी जीवनशैली, उपभोग करने और सह-अस्तित्व के तरीके पर पुनर्विचार करने की चुनौती देती हैं।

'थामा' का 'यक्षासन' मेरे बच्चों को जरूर पसंद आएगा : नवाजुद्दीन

मुंबई/एजेन्सी

अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म 'थामा' को लेकर चर्चाओं में हैं। इस बीच उन्होंने अपने फिल्म के किरदार को लेकर बात की और बताया कि यह किरदार उनके बच्चों के लिए खास रूप से रोमांचक होने वाला है।आईएएनएस से बात करते हुए नवाजुद्दीन ने कहा, ''यह रोल मेरे लिए काफी अलग और नया है, जिसे मैं लंबे समय से निभाना चाह रहा था।

फिल्म में मेरी भूमिका थोड़ी अजीब है, लेकिन यही अजीबपन बहुत दिलचस्प और मजेदार होने वाला है। मैं अपने अनुभव से बेहद खुश हूं। जब मेरे बच्चे फिल्म में मेरे किरदार 'यक्षासन' को देखेंगे, तो यकीनन उसे जरूर पसंद करेंगे। मैंने इस किरदार को निभाने में काफी मेहनत की है।'' नवाजुद्दीन ने अपनी भूमिका की एक बल्लेबाज से तुलना की, जो मैच में पूरी तैयारी के बावजूद भी अनपेक्षित गेंद का सामना करता है। उन्होंने आगे कहा, ''यह रोल मिलना मेरे लिए किसी सौभाग्य से कम नहीं है। फिल्मकार अब भी मुझे नए और अलग अवतार में देख रहे हैं।''

बता दें कि फिल्म 'थामा' में नवाजुद्दीन सिद्दीकी यक्षासन नाम के किरदार में नजर आएंगे। इस फिल्म में उनके अलावा, आयुष्मान खुराना, रश्मिका मंदाना और परेश रावल भी लीड रोल में हैं। वहीं 'पंचायत' फेम फैसल मलिक भी अहम भूमिका में नजर आएंगे। वह 'पंचायत' सीरीज में प्रहलाद चाचा के रोल में दिखे थे। यह फिल्म एक रोमांटिक कॉमेडी हॉरर है। इसमें एक वैंपायर की लव स्टोरी दिखाई जाएगी। इस फिल्म को आदित्य सरपोतदार ने निर्देशित किया है। फिल्म का निर्माण दिनेश विजान और अमर कौशिक ने मिलकर किया है। फिल्म की कहानी निरंजन भट्ट और सुरेश मैथ्यू ने लिखी है। यह मैडॉक्स फिल्म्स के हॉरर कॉमेडी यूनिवर्स का हिस्सा है। इस बैनर तले 'स्त्री', 'स्त्री 2', 'भेड़िया', और 'मुंज्या' जैसी मूवीज बन चुकी हैं। यह फिल्म 21 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। दीपावली पर रिलीज हो रही फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सोनम बाजवा और हर्षवर्धन राणे की फिल्म 'एक दीवाने की दीवानियत' से टकराएगी।

जंगली पिक्चर्स ने 'हक' का पोस्टर किया रिलीज

मुंबई/एजेन्सी

फिल्म की रिलीज़ से एक महीने पहले, जंगली पिक्चर्स ने अपनी नई फिल्म हक़ (क-ट) का पोस्टर जारी किया है। इसमें यामी गौतम धर और इमरान हाशमी के बीच एक भावनात्मक और वैचारिक टकराव दिखाया गया है।पोस्टर से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह एक सीरियस ड्रामा है, जो देश में चल रही बहस के दो अलग-अलग पक्षों को दर्शाता है। यह फिल्म एक अहम सवाल उठाती है कौम या कानून? सुपर्ण एस. वर्मा के निर्देशन में बनी और रेशु नाथ द्वारा लिखी गई यह फिल्म एक ऐतिहासिक सुप्रीम कोर्ट केस से प्रेरित है। यह कहानी 'बानो: भारत की बेटी' नाम की किताब पर आधारित है। फिल्म यह पूछती है कि हमें निजी कानून और देश के कानून (सेक्युलर लॉ) के बीच की सीमा कहाँ तय करनी चाहिए। यामी गौतम धर और इमरान हाशमी के साथ फिल्म में शीबा चड्ढा, दानिश हुसैन और असीम हतंगड़ी भी नज़र आएंगे। यह एक दमदार और सोचने पर मजबूर करने वाला कोर्टरूम ड्रामा है। जंगली पिक्चर्स ने इसे इंसोमनिया फिल्म्स और बावेजा स्टूडियोज़ के साथ मिलकर बनाया है। हक़ 7 नवंबर 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी।

फिल्म के निर्माण में तकनीशियनों का योगदान भुला दिया जाता है : केशव नायडू

मुंबई/भाषा

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का जिक्र होते ही आदित्य चोपड़ा के निर्देशन में बनी इस लोकप्रिय फिल्म में शाहरुख खान और काजोल के रोमांस की याद आ जाती है। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का संपादन करने वाले केशव नायडू का कहना है कि इस फिल्म के निर्माण में प्रतिभाशाली लोगों की एक टीम का अहम योगदान रहा लेकिन अक्सर उन्हें भुला दिया जाता है। नायडू का कहना है कि फिल्म निर्माण में शामिल उनके जैसे तकनीशियनों के योगदान को काफी हद तक नजरअंदाज कर दिया जाता है। नायडू ने यशराज फिल्म्स के लिए 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' के अलावा कई अन्य फिल्मों का संपादन किया है।

केशव नायडू ने 'पीटीआई-भाषा' को दिए एक विशेष साक्षात्कार में कहा, ''चाहे वह कैमरामैन हो, लेखक हो, कला निर्देशक हो या कोई अन्य तकनीशियन, फिल्म के हिट होने से उनके जीवन पर कोई

फर्क नहीं पड़ता। वे बस साधारण यात्री हैं जो आते हैं और जाते हैं, फिल्म पर काम करते हैं और चले जाते हैं। सिर्फ़ अभिनेता और निर्देशक ही याद रहते हैं, बाकी सभी को भुला दिया जाता है। यह बात दशकों से चली आ रही है।''

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' 20 अक्टूबर 1995 को रिलीज हुई थी, जिसने एक पीढ़ी के लिए रोमांस को नई परिभाषा दी और भारतीय सिनेमा में एक सांस्कृतिक कसौटी बन गई। पारंपरिक भारतीय मूल्यों को आधुनिक संवेदनाओं के साथ मिश्रित करने वाली इस फिल्म में राज (शाहरुख) और सिमरन (काजोल) की कहानी है। फिल्म के अविस्मरणीय संगीत, उल्लेखनीय संवाद और मुख्य जोड़ी के बीच की 'कैमिस्ट्री' ने इसे हिंदी सिनेमा में बनी अब तक की सबसे महान फिल्मों में से एक बना दिया है। नायडू ने दिवंगत फिल्मकार यश चोपड़ा के साथ उनकी सिलसिला, मशाल, चांदनी, लम्हे, परंपरा और डर जैसी फिल्मों में काम किया है।

नायडू (81) ने यश चोपड़ा के सहायक निर्देशक के रूप में आदित्य से हुई मुलाकात को याद करते हुए कहा कि उन्हें उस समय के नवोदित निर्देशक के साथ काम करने में बहुत आनंद आया था। नायडू ने कहा, ''यश चोपड़ा को मुझ पर भरोसा था कि मैं संपादन का काम सही ढंग से कर सकता हूं... किसी और को भी यही मौका मिल सकता था, लेकिन मैं भाग्यशाली था कि मुझे उनकी कई फिल्मों का संपादक बनने का मौका मिला।'' नायडू ने कहा कि एक संपादक के रूप में उनका उद्देश्य हमेशा निर्देशक के दृष्टिकोण को पूरा करना रहा है, तथा यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक कट कहानी के मुताबिक हो।

'मिर्जापुर : द फिल्म' के सेट से लीक हुआ वीडियो

मुंबई/एजेन्सी

देश की सबसे लोकप्रिय वेब सीरीज़ में से एक 'मिर्जापुर' अब बड़े पर्दे पर दस्तक देने को तैयार है। एक्सेल एंटरटेनमेंट और अमेज़न स्टूडियोज़ ने मिलकर इस ब्लॉकबस्टर फ्रेंचाइज़ को फिल्म रूप में पेश करने का ऐलान किया है। नई फिल्म का शीर्षक होगा 'मिर्जापुर: द फिल्म'। इसे क्रिएट किया है पुनीत कृष्णा ने, जबकि निर्देशन की कमान गुरमीत सिंह संभाल रहे हैं। 'मिर्जापुर' ने अपने दो सीज़न के जरिए दर्शकों के बीच जो लोकप्रियता हासिल की, वह किसी रिकॉर्ड से कम नहीं थी। शो के किरदार, संवाद और कहानी ने भारतीय ओटीटी इतिहास में एक नई पहचान बनाई। इस बीच फिल्म की शूटिंग से जुड़ा एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। वीडियो में फैंस अपने पसंदीदा किरदारों में कालीन भैया (पंकज त्रिपाठी) और गुड्डू पंडित (अली फज़ल) को एक बार फिर साथ देखकर झूम उठे हैं। वाराणसी के रामनगर किले और पुरानी गलियों में चल रही शूटिंग की झलकियों ने सोशल मीडिया पर तहलका मचा दिया है। फिल्म में पंकज त्रिपाठी और अली फज़ल के साथ-साथ दिव्येंदु शर्मा (मुन्ना त्रिपाठी) और अभिषेक बनर्जी भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। माना जा रहा है कि यह फिल्म ओटीटी पर दिखाए गए संघर्ष, सत्ता और बदले की कहानी को एक नए पैमाने पर पेश करेगी। निर्माताओं के मुताबिक, 'मिर्जापुर: द फिल्म' साल 2026 में सिनेमाघरों में रिलीज़ की जाएगी। फिल्म की थिएटर रिलीज़ के आठ हफ्ते बाद इसे प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम किया जाएगा।

मनीष पॉल ने अमिताभ बच्चन के आशीर्वाद से की दिवाली की शुरुआत

मुंबई/एजेन्सी

हर साल की तरह इस बार भी मनीष पॉल ने अपनी दिवाली की शुरुआत महानायक अमिताभ बच्चन के आशीर्वाद लेकर बेहद यादगार और शानदार तरीके से की है और ये बात अपने प्रशंसकों तक उन्होंने खुद पहुंचाई है। सोशल मीडिया पर तस्वीर साझा करते हुए मनीष ने अपने फैंस के साथ इस खास पल को साझा किया है, जिसमें उनकी खुशी और कृतज्ञता साफ झलक रही है।तस्वीर में महानायक अमिताभ बच्चन का आशीर्वाद लेते हुए उनकी ख़ुशी साफ़ झलक रही है, जैसे किसी सच्चे फैनबॉय का सपना पूरा हो गया हो। गौरतलब है कि मनीष के जीवन में, अमिताभ बच्चन बेहद विशेष स्थान रखते हैं और ये बात मनीष कई बार कह भी चुके हैं। वे सिर्फ अमिताभ बच्चन को सिर्फ आदर्श नहीं, बल्कि अपना गुरु और मार्गदर्शक भी मानते हैं, जिन्होंने उनके करियर के साथ उनके जीवन को भी एक दिशा दी है। वैसे हाल ही में अपनी पिछली फिल्म 'सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी' में नज़र आए मनीष पॉल,

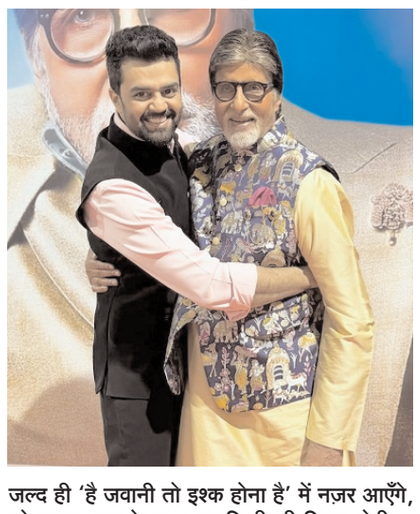

जल्द ही 'है जवानी तो इश्क होना है' में नज़र आएँगे, जो वरुण धवन के साथ उनकी तीसरी फिल्म होगी।

समय पर किए गए कार्य का ही महत्व है : संतश्री ज्ञानमुनि

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के यलहंका स्थित सुमतिनाथ जैन संघ के तत्वावधान में चातुर्मासार्थ विराजित संतश्री ज्ञानमुनिजी ने कहा कि प्रभु महावीर के निर्वाण उत्सव का रसास्वादन चल रहा है। प्रभु की भव्य और कल्याणी अंतिम वाणी का आराधन चल रहा है। प्रभु महावीर ने अंतिम वाणी में जग से कल्याण का मार्ग बतलाया है। भगवान जहां विराजते हैं वहां कुछ भी चले, उनसे कोई मतलब नहीं होता है। 26वां अध्ययन समाचारी है। घर की व्यवस्था अच्छी हो। शिष्टाचार हो, नम्रता हो और शालीनता हो, इसका इस अध्ययन में उल्लेख है। गुरु, संतों और लोगों को कैसे घर में रहना है, समाज में रहना है यह इसके माध्यम से सिख सकते हैं। मुनि अगर कहीं बाहर भी जाए तो निवेदन करें। यह शिष्टाचार है।

जहां शिष्टाचार है वहां कल्याण संभव है। घर में बड़े बुजुर्ग हैं तो उनसे पूछ कर ही काम चाहिए। आज कल के जमाने में यह व्यवस्था बहुत जरूरी है। बहु बेटी भी कहीं जा रही हैं तो घर में बड़े बुजुर्ग को बता कर ही जाएं। आज्ञा लिए बिना काम नहीं करना चाहिए। अगर कोई गलती हो तो माफी मांग लेनी चाहिए। गुरु भगवंत आएं तो खड़े होकर हाथ जोड़ लेना चाहिए। यह सभी शिष्टाचार की श्रेणी में आती है। जिस मानव में यह ज्ञान नहीं है वह अज्ञानी समान है। बिना शिष्टाचार के मानव ज्ञान ध्यान नहीं सीख सकता है। जिस समय जो काम करना है उसको उसी समय करना चाहिए। हर चीज का एक समय होता है। रात में बारह बजे स्वाध्याय नहीं किया जाता है। उसका समय अलग होता है।

समय पर ही स्वाध्याय, ज्ञान ध्यान करना चाहिए। कोई भी काम करें तो समय पर करें। जो काम जिस समय होता है उसी समय करना चाहिए। इससे सभी की शोभा बनी रहेगी। मुनिश्री ने कहा कि स्वाध्याय मतलब भगवान की वाणी को पढ़ना होता है। इसलिए इसके नियम का पालन बहुत जरूरी होता है। जिस तरह से शरीर में सिर का महत्व है उसी प्रकार साधु धर्म ध्यान का महत्व होता है। दूसरा अध्ययन दुष्ट बैल है। ऐसा बैल चलाने वाला दुखी होता है। बैल भी दुखी होता है और उसका मालिक भी दुखी होता है। जो मानव दुष्ट होता है उससे सब परेशान होते हैं। जो अच्छा होता है उसको सब पसंद करते है। जो सही नहीं होता है उसको कोई पसंद नहीं करता है। सेवा भावी लोगों को सभी पसंद करते हैं, इसलिए मनमर्जी से चलने के बजाय सबकी सुन कर करो। अच्छे मार्ग से कमाई होगी तो टिकेगा।

गलत मार्ग का कभी नहीं टिकता है। इसलिए संसार में रह कर अच्छे मार्ग से कमाई करनी चाहिए। धनतेरस पर लक्ष्मी की पूजा होगी। लेकिन गलत मार्ग से कमाने से बचना चाहिए। अच्छे और न्याय के मार्ग से जो कमाई होगी उससे लक्ष्मी मां प्रसन्न रहेंगी। सभा में श्रमणी चंदन प्रभाश्रीजी की विशेष उपस्थिति रही। चंदन प्रभा जी पद्मावती माताजी की परम भक्त हैं। पद्मावती माताजी का जोधपुर के पास भव्य मंदिर का निर्माण कराया है।

गुरु ही साधना का पथप्रदर्शक दीपक है : डॉ वरुणमुनि

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के गुजराती जैन भवन में चातुर्मासिक प्रवचन में डॉ वरुण मुनिजी ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि गुरु जीवन का वह आलोक स्तंभ है, जो अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर साधना के मार्ग को प्रकाशित करता है।

उन्होंने कहा कि गुरु के मार्गदर्शन के बिना साधना अधूरी रह जाती है, क्योंकि गुरु ही वह सेतु है जो आत्मा को सत्य और शांति के तट तक पहुँचाता है। मुनिश्री ने कहा कि गुरु का सान्निध्य आत्मिक विकास की परम आवश्यकता है। गुरु केवल ज्ञान ही नहीं देते, वे जीवन को अनुशासन, मर्यादा और उद्देश्य की दिशा भी प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति अपने जीवन में गुरु के प्रति श्रद्धा और समर्पण रखता है, वही सच्चे अर्थों में आत्म-साधना की पूर्णता को प्राप्त करता है। उन्होंने श्रद्धालुओं को प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में जब भी भ्रम या द्वंद्व की स्थिति आए, तब गुरु के उपदेशों को स्मरण करना चाहिए, क्योंकि वही सत्य का मार्ग दिखाते हैं और भक्ति को स्थिरता प्रदान करते हैं। सभा के अंत में सभी ने मुनिश्री के चरणों में वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। उपप्रवर्तक श्री पंकज मुनि जी म.सा. ने मंगल पाठ प्रदान किया। कार्यक्रम के दौरान रूपेशमुनिजी ने भजनों की मनमोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन राजेश मेहता ने किया।

सम्मान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

बेंगलूरु के सिवांची ओसवाल जैन महिला संघ की नई अध्यक्ष सारिका प्रवीण लुंकड़ का सम्मान बेंगलूरु के अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघ शाखा के सदस्यों ने किया। महासंघ के अध्यक्ष मनोज बाफना, कैलाश संखलेचा, दिलीप भंडारी, राजेश श्रीश्रीमाल, आशिक पिरगल, कंचन श्रीश्रीमाल, दिव्या पिरगल, जोसना पारलेचा आदि ने सारिका का सम्मान कर शुभकामनाएं दी।

तेयुप राजाजीनगर ने अभातेयुप के नए अध्यक्ष व संगठन मंत्री का किया सम्मान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत एवं राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी का सम्मान समारोह तेरापंथ भवन राजाजीनगर में आयोजित किया गया। तेयुप के अध्यक्ष जितेश दक ने सभी का स्वागत किया तथा दोनों पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दी। इसी कड़ी में तेरापंथ सभा राजाजीनगर के अध्यक्ष अशोक चौधरी एवं महिला मंडल की अध्यक्ष सुनीता कोठारी ने भी शुभकामनाएं दी। तेयुप के मंत्री अनिमेष चौधरी ने बताया कि सत्र 2024 -25 तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया के नेतृत्व में तेयुप राजाजीनगर को सेवा के क्षेत्र में प्रथम स्थान सहित अन्य तेरह पुरस्कार मिले साथ ही किशोर मंडल के 20वें राष्ट्रीय किशोर मंडल अधिवेशन 'कर्तव्यम' में किशोर मंडल राजाजीनगर को सेवा में द्वितीय पुरस्कार एवं सात अन्य सम्मानों से पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम में राजाजीनगर सभा के पूर्व अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी, उपाध्यक्ष विमल पितलिया, सभाके मंत्री चन्द्रेश मांडोत एवं सहमंत्री सतीश पोरवाड़ व कांफिडेंट पब्लिक स्पीकिंग के चीफ ट्रेनर अरविंद मांडोत ने अपने विचार व्यक्त किए। नवमनोनीत अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी ने किशोर मंडल से लेकर अभातेयुप तक की अपनी यात्रा का उल्लेख किया एवं मिशन 60 यानी पूरे भारत में युवकों एवं किशोरों की संख्या 60,000 तक पहुँचाने का संकल्प साझा करते हुए आगामी 51 दिवसीय अखंड जाप कार्यक्रम के बारे में जानकारी साझा की। पवन मांडोत ने तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया एवं उनकी पूरी टीम को बधाई दी तथा वर्तमान टीम के साथ मिलकर परिषद को 'श्रेष्ठ परिषद' की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने परिषद परिवार से सतीश पोरवाड़ को अभातेयुप में प्रवृति सलाहकार के रूप में एवं राजेशजी देरासरिया को एटीडीसी नेशनल टीम में लेने की घोषणा की। मंच का संचालन तेयुप के मंत्री अनिमेष चौधरी ने किया तथा तेयुप के उपाध्यक्ष जयंतीलाल गांधी ने धन्यवाद दिया।

विजयनगर अर्हम भवन में 'ओम भिक्षु महाजप अनुष्ठान' का आयोजन हुआ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। आचार्य भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष पर तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा विश्व शांति हेतु विशेष ओम भिक्षु महाजप अनुष्ठान का आयोजन साध्वीश्री संयमलताजी के सान्निध्य में अर्हम भवन के प्रांगण में किया गया। साध्वी संयमलताजी ने लयबद्धता के साथ ओम भिक्षु जप अनुष्ठान करवाया।

साध्वीश्री ने जप का समापन भिक्षु स्वामी की गीतिका के साथ किया। मंडल की अध्यक्षा महिमा पटावरी ने साध्वी जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम में अभातेममं की पूर्व महामंत्री वीणा बैद, मंत्री सरिता छाजेड़, सभा के अध्यक्ष मंगल कोचर, तेयुप के अध्यक्ष विकास बांठिया, अणुव्रत समिति के राष्ट्रीय संगठन मंत्री राजेश चावत सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे। जाप के मौके पर 173 से ज्यादा श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इसके साथ ही जूम के माध्यम से विजयनगर के विभिन्न अपार्टमेंटो में सामूहिक जप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। संपूर्ण विजयनगर क्षेत्र में लगभग 511 श्रद्धालुओं ने इस जप अनुष्ठान में भाग लिया

प्रभु भक्ति सच्ची श्रद्धा से करें : उपप्रवर्तक नरेशमुनि

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के मागडी रोड़ स्थित गुरु ज्येष्ठ पुष्कर दरबार में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए उपप्रवर्तकश्री नरेशमुनिजी ने भगवान महावीर की अंतिम देशना श्री उत्तराध्ययन सूत्र पर सारगर्भित विवेचना प्रस्तुत करते हुए कहा कि व्यक्ति को प्रभु की भक्ति निष्काम भाव से सच्ची श्रद्धा आस्था के साथ करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी माया ही है जो हमें वहीं खड़ा कर देती है जो हमें आगे नहीं बढ़ने देती है। जो प्रभु से हमें दूर करें उसके जैसा कोई शत्रु नहीं और वहीं जो हमें प्रभु के नजदीक लाएं समझो उससे बड़ा कोई मित्र नहीं। अविनीत शिष्य को दुष्ट बैल की उपमा देते हुए कहा कि ऐसे ही अविनीत शिष्य के साथ को छोड़कर गुरु का अकेले विचरण करना अच्छा है जिससे गुरु अपने समता भाव में सुख शांति साता पूर्वक विचरण कर सकता है और गुरु की ऐसे नालायक शिष्य के कारण गुरु की समाधि भी भंग नहीं होती है। उन्होंने कहा कि जो जिन शासन से जुड़ जाता है वो संसार से पार हो जाता है। जैसे जहाज में बैठ कर यात्रा करने वाला नहीं चलकर भी सागर से पार हो जाता है। जिनवाणी भी साधक को सागर सागर से पार लगाने वाली है। उन्होंने कहा कि धर्म ही संसार में रक्षक और सारभूत है। धर्म एक द्वीप के समान है। ङ्कसंतश्री ने कहा कि संसार में इन्सान की पूजा, महानता उसके जन्म एवं जाति, रंग , रूप, वैभव से नहीं बल्कि उसके गुणों से होती है। अपने कर्म एवं स्वभाव की उच्चता के कारण व्यक्ति की महानता गिनी जाती है। समता भाव से श्रमण, ब्रह्मचर्य पालन से ब्राह्मण ज्ञानसाधना से मुनि तथा तपाचरण से तापस होता है। प्रवचन समाप्ति के पश्चात अष्ट दिवसीय पर्युषण पर्व के दौरान किए गए नवकार महामंत्र जाप कलश का लाभ प्रवीण कुमार रतन कुमार संकलेशा ने लिया। श्रुत साधना में सहयोगी समोवशरण धर्म सारथी बने अक्कीपेट नवयुवक मंडल के सदस्य। समिति की ओर से धन्यवाद दिया गया।

जाप अनुष्ठान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में शुक्रवार को तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल राजाजीनगर द्वारा विश्व शांति हेतु 'ॐ भिक्षु महाजप अनुष्ठान' का आयोजन किया जिसमें महिला, कन्या, किशोर मंडल, ज्ञानशाला, युवक परिषद और सभा के कुल 75 सदस्य तथा ऑनलाइन तरीके से 150 लोग शामिल हुए। मंडल की अध्यक्ष सुनीता कोठारी ने सभी का स्वागत किया।

राजा चार्ल्स के भाई एंड्रयू ने शाही उपाधियां त्यागी

लंदन/भाषा। ब्रिटेन के राजा चार्ल्स तृतीय के छोटे भाई राजकुमार एंड्रयू ने अमेरिकी यौन अपराधी जेफरी एपस्टीन के साथ अपने संबंधों को लेकर लग रहे आरोपों के बीच, राजा के साथ चर्चा के बाद ड्यूक ऑफ यॉर्क और अन्य सभी शाही उपाधि त्याग दी हैं। राजकुमार एंड्रयू (65) ने 'हिज रॉयल हाइनेस' की उपाधि का उपयोग पहले ही करना बंद कर दिया था। उन्होंने शुक्रवार को घोषणा की कि उनकी अन्य सभी उपाधियां भी निष्क्रिय हो जाएंगी। हालांकि, वे अपने खिलाफ लगे सभी आरोपों का पुरजोर खंडन करते रहे हैं। दिवंगत महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के पुत्र होने के नाते, वे 1917 में किंग जॉर्ज पंचम द्वारा जारी 'लेटर्स पेटेंट' के अनुसार ''राजकुमार'' की उपाधि बरकरार रखेंगे, जिसे उनकी मां ने 2012 में अद्यतन किया था। बकिंघम पैलेस द्वारा जारी एक बयान में राजकुमार एंड्रयू ने कहा, राजा और मेरे निकट एवं व्यापक परिवार के साथ चर्चा में, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि मुझ पर लगातार लग रहे आरोप महामहिम और शाही परिवार के काम में बाधा डाल रहे हैं। उन्होंने कहा, मैंने हमेशा की तरह, अपने परिवार और देश के प्रति अपने कर्तव्य को सर्वोपरि रखने का निर्णय लिया है।

'खागा' ने दीपावली पूजन पर 'संडे बाजार' बंद रखने की मांग की

बेंगलूरु/दक्षिण भारत। शहर के कर्नाटक होजरी एंड गारमेंटस एसोसिएशन के सचिव कैलाश बालर, सहसचिव बिशनसिंह विराणा, जोगसिंह ने शनिवार को हाउसिंग, वक्फ और अल्पसंख्यक कल्याण विभाग मंत्री बीजेड जमीर अहमद खान से मुलाकात कर दीपावली पर्व के मद्देनजर रविवार होने के कारण संडे बाजार न लगाने के लिए आदेश जारी करने का निवेदन किया।

मंत्री अहमद ने खागा की मांग को जायज बताते हुए प्रशासनिक अधिकारियों को फोन करके संडे के दिन 'संडे बाजार' नहीं लगने देने का निर्देश दिया, ताकि इस क्षेत्र के व्यापारियों को दीपावली पूजन में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

गांधीनगर तेरापंथ भवन में भिक्षु महाजाप में गूंजा भिक्षु जयघोष

बेंगलूरु/दक्षिण भारत। विश्व शांति हेतु 'ओम भिक्षु महाजाप अनुष्ठान' के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में बृहद रूप से मुनि डॉ. पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में भिक्षु जाप आयोजित हुआ। संगायिका हेमलता पिपाड़ा ने मधुर स्वरों से 45 मिनट तक अनवरत भिक्षु जाप करवाया।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की कार्यकारिणी सदस्य वीणा बैद एवं डॉ. सारिका गिड़िया की उपस्थिति में मंडल की अध्यक्ष लक्ष्मी बोहरा ने सभी का स्वागत किया।

ऑन लाइन तरीके से जेएसएस कस्तूरबा विमन एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर सेंटर चामराजपेट, आचार्यश्री महाप्रज्ञ हाई स्कूल महालक्ष्मी लेआउट में लगभग 900 बच्चों ने अनाथ शिशु सेवाश्रम विल्सन गार्डन, शांतिनगर के हेरिटेज अपार्टमेंट्स, मैसूर रोड स्थित मैक फार्मास्युटिकल, शोभा इंद्रप्रस्थ परिसर में भी सामूहिक रूप से जाप अनुष्ठान हुआ।ङ्कजाप के मौके पर तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर की सदस्याओं ने व्यवस्था सँभाली। कार्यक्रम में महासभा, अभातेयुप, तेरापंथ सभा, ट्रस्ट, युवक परिषद, प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला के पदाधिकारी उपस्थित थे। मंत्री विजेता रायसोनी ने धन्यवाद दिया।

भारतीय फिल्म 'डुपकी' का बीजिंग बाल महोत्सव में प्रीमियर

बीजिंग/भाषा। भारतीय कॉमेडी फिल्म 'डुपकी' का शनिवार को छठे बीजिंग अंतरराष्ट्रीय बाल महोत्सव में प्रीमियर हुआ, लेकिन इस कार्यक्रम में फिल्म का निर्देशक या कोई कलाकार शामिल नहीं हो सका।बीजिंग अंतरराष्ट्रीय बाल महोत्सव के अधिकारी गेविन ली ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि 16 अक्टूबर से शुरू हुए चार-दिवसीय कार्यक्रम में 62 फिल्में प्रदर्शित की गईं।हालांकि, वीजा नहीं मिल पाने के कारण 'डुपकी' के निर्देशक और इसके कलाकारों की गैर-मौजूदगी में इसे प्रदर्शित किया गया।गेविन ली ने कहा, यह अफसोस की बात है कि फिल्म निर्माताओं को वीजा नहीं मिल सका।'डुपकी' के निर्देशक अभय पंजाबी ने कहा कि उनकी फिल्म के प्रदर्शन के लिए चयनित होने के बावजूद 'डुपकी' टीम का कोई भी सदस्य बीजिंग जाने के लिए वीजा प्राप्त नहीं कर सका।पंजाबी ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि दिल्ली स्थित चीनी दूतावास ने उनका वीजा आवेदन खारिज कर दिया।

पंजाबी ने कहा कि उन्होंने आयोजकों के आधिकारिक निमंत्रण पत्र के साथ वीजा आवेदन प्रस्तुत किया था, लेकिन उनका आवेदन अस्वीकार कर दिया गया और अस्वीकृति के लिए कोई कारण नहीं बताया गया। फिल्म की कहानी अलग-अलग पृष्ठभूमि से आए तीन बढ़ते बच्चों के सपनों पर आधारित है।

नामांकन

जम्मू में शनिवार को नगरोटा विधानसभा सीट उपचुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने के बाद एक जनसभा के दौरान भाजपा उम्मीदवार देवयानी राणा।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

समापन समारोह : बेंगलूरु सिटी पुलिस द्वारा यूनिवर्सिटी खेल मैदान में आयोजित क्रिकेट स्पर्धा 'गुरु शिष्य कप 2025' के समापन समारोह में विजेता टीम को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत एवं अन्य।

Printed& Published by Devendra Sharma on behalf of owners M/s. New Media Company, 6/4 , Ist floor, Cantonment station road, Bengaluru-51 and printed at Dinasudar Printing Division, 116, Queens Road, Bengaluru-560052. **Editor-Shreekant Parashar**,
(*Responsible for selection of news under PRB Act.) Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.
HEAD OFFICE : DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT, New Media Company, 6/4, Cantonment Station Road, Bangalore 560051. Editorial : 080-25363030 / 9945488003. For Advertisement : 9945488002 - email : news@dakshinbharat.com/**RNI No. 58061/93.**